ओ३म्

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
हिन्दी मासिक मुख पत्र
मास-कार्तिक संवत् 2072
नवम्बर 2015

अंक 124, मूल्य 10

अग्निदूत

अग्निं दूतं वृणीमहे. (ऋग्वेद)

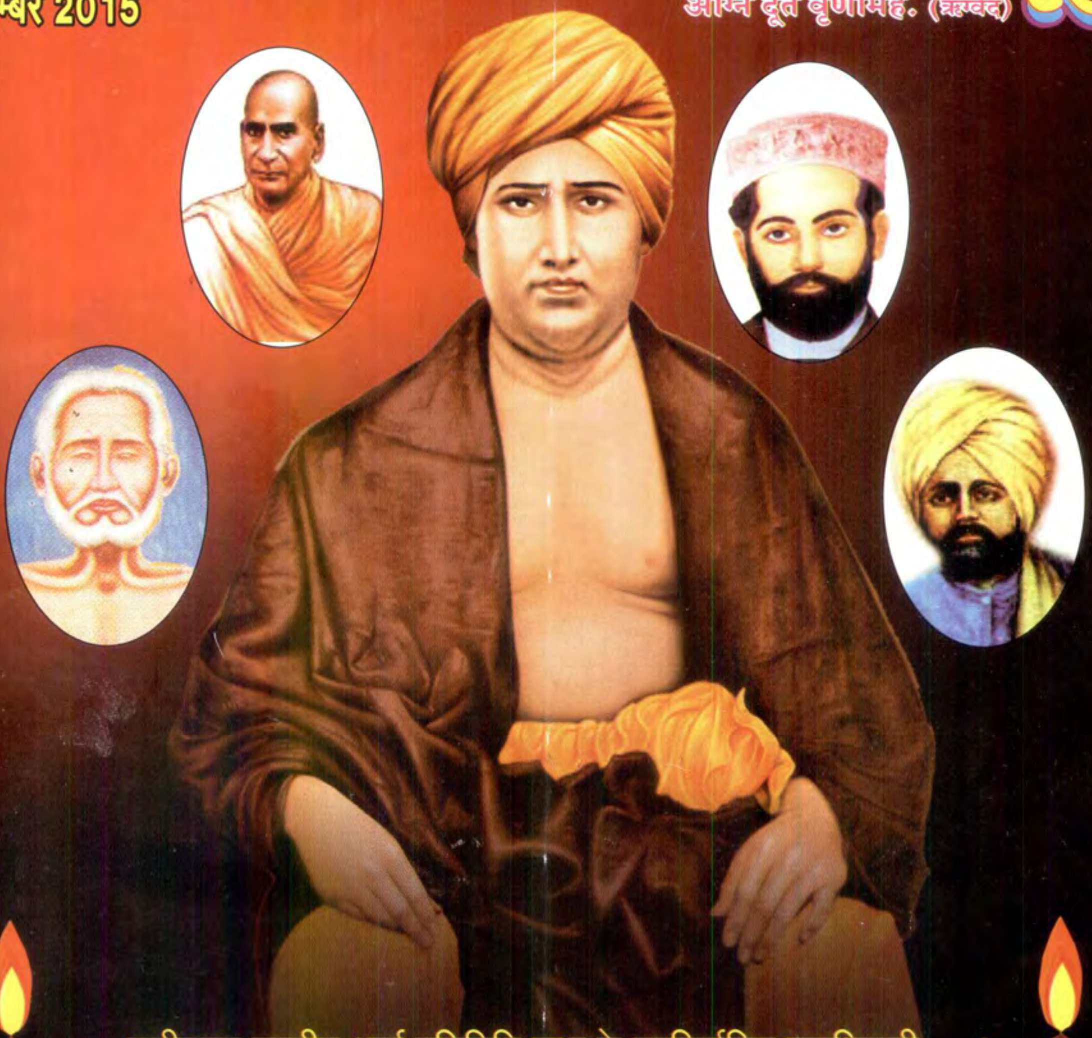

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के नवनिर्वाचित पदाधिकारी

सभा कोषाध्यक्ष
श्री जोगीराम आर्य

सभा प्रधान
आचार्य अंशुदेव आर्य

सभा मंत्री
श्री दीनानाथ वर्मा

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के नवनिर्वाचित पदाधिकारी एवं अंतरंग सदस्य

दयाराम वर्मा
उपप्रधान रायपुर संभाग

सोमप्रकाश गिरी
उपप्रधान बस्तर संभाग

गोपीराम साहू
उपप्रधान बिलासपुर संभाग

महिपतलाल आर्य
उपप्रधान रायगढ़ संभाग

दिलीप आर्य
उपमंत्री कार्यालय एवं
मुख्य अधिष्ठाता भू सम्पत्ति

चतुर्भुज आर्य
उपमंत्री रायपुर संभाग

सत्यकाम आर्य
उपमंत्री बस्तर संभाग

आचार्य रणवीर आर्य
उपमंत्री बिलासपुर संभाग

रविशंकर आर्य
उपमंत्री रायगढ़ संभाग

विनोद बिहारी सक्सेना
पुस्तकाध्यक्ष

तपेश्वर कुमार शर्मा
अंतरंग सदस्य

आनन्द कुमार भोई
अंतरंग सदस्य

अग्निदूत

हिन्दी मासिक

राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक विचारों की मासिक पत्रिका

विक्रमी संवत् - २०७२
सृष्टि संवत् - १,९६,०८,५३,११६
दयानन्दाब्द - १९१

वर्ष - ११, अंक ५ — ओ३म् — मास/सन् - नवम्बर - २०१५

श्रुतिप्रणीत-सिद्धधर्मवह्निरूपतत्त्वकं,
महर्षिचित्त-दीप्त वेद-सारभूतनिश्चयं।
तदग्निसंज्ञकस्य दौत्यमेत्य सद्मसद्मकम्,
सभाग्निदूत-पत्रिकेयमादधातु मानसे।।

: प्रधान सम्पादक :
आचार्य अंशुदेव आर्य
प्रधान सभा
(मो. ०७०४९२४४२२४)

★

: प्रबंध सम्पादक :
आर्य दीनानाथ वर्मा
मंत्री सभा
(मो. ९८२६३६३५७८)

★

: सहप्रबंध सम्पादक :
श्री जोगीराम आर्य
कोषाध्यक्ष सभा
(मो. 9977152119)

★

: व्यवस्थापक :
श्री दिलीप आर्य
उपमंत्री (कार्यालय) सभा
मो. ९६३०८०१२५७

★

: सम्पादक :
आचार्य कर्मवीर
मो. ९७५२३८८२६७

पेज सज्जक : श्रीनारायण कौशिक
प्रबधंक : श्री रामेश्वर प्रसाद यादव

– कार्यालय पता –
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द परिसर, आर्य नगर, दुर्ग (छ.ग.)४९१ ००१
फोन : (०७८८) ४०३०९७२
फैक्स नं. : ०७८८-४०११३४२ ;
e-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com

वार्षिक शुल्क - १००/- दसवर्षीय-८००/-

विषय - सूची

			पृष्ठ क्र.
१.	वेदामृत : दुन्दुभि बजे	स्व. डॉ. रामनाथ वेदालङ्कार	०४
२.	सम्पादकीय : हे नवजागरण के पुरोधा दयानन्द तुम्हें प्रणाग	आचार्य कर्मवीर	०५
३.	वेद मनुष्य को मनुष्य बनने का सन्देश देता है	ओमप्रकाश आर्य	०८
४.	आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द	सुश्री अंजलि आर्या	११
५.	महर्षि के विचार दीपों की अमर ज्योति	स्व. आचार्य भद्रसेन	१३
६.	महर्षि दयानन्द तीनों ऐषणाओं से परे थे	मनमोहन कुमार आर्य	१६
७.	प्रेरणात्मक : "ममता की छाँव"	देवेन्द्र कुमार मिश्रा	१८
८.	प्रतिदिन यज्ञ करते हुए भी प्रायः लोगों को लाभ क्यों नहीं होता ?	आचार्य आर्यनरेश	२१
९.	कर्मयोगी : पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी	महात्मा चैतन्यमुनि	२३
१०.	देवतास्वरूप भाई परमानन्द	राजेन्द्र जिज्ञासु	२४
११.	जयंती : स्वामी दर्शनानन्द	डॉ. अशोक आर्य	२५
१२	होमियोपैथी चिकित्सा से अस्थमा का उपचार	डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी	२६
१३.	त्रैवार्षिक वृहदधिवेशन एवं निर्वाचन की कार्यवाही	मंत्री, दीनानाथ वर्मा	२७
१४.	समाचार दर्पण		३१

सूचना : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का अणुसंकेत
(ई-मेल) E-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com
(सम्पादक) E-mail : shastrikv1975@gmail.com

सूचना : हमारा नया वेब साइट देखें
Website : http:/www.cgaryapratinidhisabha.com

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है।

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा उषा प्रिन्टर्स, मॉडल टाऊन भिलाई से छपवाकर छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग से प्रकाशित किया गया।

दुन्दुभि बजे

भाष्यकार - स्व. डॉ० रामनाथ वेदालङ्कार

आ क्रन्दय बलमोजो न आ धाः, निःष्टनिहि दुरिता बाधमानः।
अप प्रोथ दुन्दुभि दुच्छुना इतः, इन्द्रस्य मुष्टिरसि वीळयस्व॥ ऋग्. ६.४७.30

ऋषिः गर्गः भरद्वाजः। देवता दुन्दुभिः। छन्दः भुरिक् त्रिष्टुप्।

● **(दुन्दुभे)** हे दुन्दुभि! (तू) **(आ कन्दय)** (शत्रुओं को) कन्दन करा, **(नः)** हमारे अन्दर **(बलं)** मनोबल (और) **(ओजः)** आत्मिक तेज को **(आ धाः)** आधान कर, **(दुरिता)** दुष्टताओं को **(बाधमानः)** बाधित करता हुआ **(निःष्टनिहि)** गरज, **(इतः)** यहां से **(दुच्छुनाः)** हमें दुखी करके सुख मनानेवाली शत्रु-सेनाओं को **(अप प्रोथ)** दूर खदेड़। (तू) इन्द्रस्य वीरात्मा की **(मुष्टिः)** मुट्ठी **(असि)** है, **(वीडयस्व)** दृढ़ता धारण कर पराक्रम दिखा।

हे दुन्दुभि! तू बज, उच्च नाद कर। अपने गम्भीर गर्जन की प्रतिध्वनि से शत्रु के दिलों को दहला दे, उनके अन्दर हाहाकार मचा दे। तेरे जिस गगनव्यापी उच्च निनाद से शत्रुओं के मन भयभीत हों, वही तेरा निनाद हमारे अन्दर मनोबल, उत्साह और आत्म-तेज का आधान करने वाला हो। शत्रुओं की दुष्टताओं को बाधित करती हुई तू बिजली के समान गरज। हमें दुःखी करके सुख के दीपक जलाने के मनसूबे बांधने-वाली शत्रु सेनाओं को हे दुन्दुभि! तू दूर खदेड़ दे। तू महावीर इन्द्र की मुट्ठी है, जैसे वैदिक 'इन्द्र' अपनी मुट्ठी में पकड़े हुए वज्र से वृत्र का संहार करता है, वैसे ही तू अपने उस शब्द से शत्रुओं की हिम्मत पस्त कर देने वाली है। तू दृढ़ हो, अपना पराक्रम दिखा। शत्रु दल को परास्त कर, हमारे दल को प्रहृष्ट कर।

भाईयों! यह तो है बाह्य दुन्दुभि की बात, पर हमारे अन्दर भी तो दुन्दुभि बजनी चाहिए। अन्दर बजने वाली दुन्दुभि है ईश्वरीय वाणी। बाह्य संग्राम के समान हमारे अन्दर भी देवासुर-संग्राम मचा हुआ है। ईश्वरीय वाणी का दुन्दुभि-नाद असुर-सैन्य को रुला और सुर-सैन्य को हर्षित कर सकता है। वह हमारे अन्दर मनोबल और आत्म-तेज का आधान कर सकता है, हमारी प्रसुप्त शक्तियों को जगा सकता है। वह हमारे 'दुरितों' का, पापों, दुर्व्यसनों और दुष्ट कर्मों का अन्त कर सकता है। हमारे अधःपतन में सुख मनाने वाली हिंसा, अनृत, सुरा आदि की सेनाओं को पद-दलित कर सकता है। ईश्वरीय अन्तःप्रेरणा की वह दुन्दुभि हमारे आत्मा-रुप इन्द्र की मुष्टि है, कसकर पकड़ कर रखने योग्य है। यदि आत्मा ने ईश्वरीय प्रेरणा-रुप दुन्दुभि को दृढ़ता के साथ न पकड़ा तो वह बजनी बन्द भी हो सकती है।

हे मेरे आत्माकाश में बजने वाली ईश्वरीय प्रेणा की दुन्दुभि! तू सदा बजती रह, उच्च विद्युद्-गर्जन के समान गम्भीर ध्वनि से गरजती रह, दृढ़ता के साथ पराक्रम दिखाती रह, समस्त आसुरी माया को विच्छिन्न करती रह।

संस्कृतार्थ :- १. ष्टन शब्दे। २. अस्मददुःखहेतुभूतं शुनं सुखं यासा तादृशीः शत्रुसेनाः (सायण)। ३. प्रोथ पर्याप्तौ। ४. वीडयति संस्तम्भनार्थक (निघं. ५.१६) अथवा वीर विक्रान्तौ, र को ड।

सम्पादकीय

हे नवजागरण के पुरोधा दयानन्द; तुम्हें प्रणाम

दयानन्द जीवन भर देश धर्म का एक महादीपक बनकर जलता रहा, अज्ञानान्धकार से लोहा लेता रहा, जब लोग मिट्टी के दीये से रोशनी करने की कोशिश कर रहे थे, सैकड़ों नहीं हजारों लाखों दीये जलाकर तब वह बूझ चुका था, आइए, प्रकाश पर्व के इस अवसर पर उस महापुरुष के महनीय कीर्ति को याद करें। आगामी कार्तिक कृष्ण अमावस्य देवदयानन्द का निर्वाण दिवस है।

अद्वितीय प्रतिभा के धनी महर्षि दयानन्द भारत के जननेताओं, कर्मयोगी विचारकों एवं ऋषियों की गौरवमयी परम्परा के जाज्वल्यमान नक्षत्र थे। उनके व्यक्तित्व में मानवता, सत्यनिष्ठा, कर्मयोग, विद्वता एवं लोकनायकत्व आदि गुणों का दुर्लभ सम्मिश्रण था। आडम्बरों से घृणा करने वाले वे सत्यनिष्ठ महात्मा-सन्त एवं सुधारक होने के साथ-साथ उच्चकोटि के राष्ट्रपुरुष एवं राजनीतिज्ञ थे। आर्य-संस्कृति के व्याख्याता वा भारतीयता के पोषक के रुप मं भी उनकी देन कम महत्वपूर्ण नहीं है। आज स्वदेशी राज्य, राष्ट्रभक्ति, प्रजातन्त्रात्मक पद्धति, समाज निर्माण एवं जनजागरण की धूम चारों ओर है। इन अच्छाइयों को उभारने तथा प्रसार देने का श्रेय नवोदय के अग्रदूत राष्ट्रपुरुष महर्षि दयानन्द को ही दिया जा सकता है।

महर्षि दयानन्द आधुनिक युग के राष्ट्रीय पुनर्जागरण एवं राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के वे पहले अनुपम प्रवक्ता थे, जिन्होने स्वदेशी राज्य, स्वाभिमान एवं स्वदेश-भक्ति के बीज बिखेरे थे। यही नहीं अपने व्याख्यानों एवं रचनाओं द्वारा उसके प्रसार एवं प्रचार में भी आयुपर्यन्त वे प्राणपन से संलग्न रहे। अपनी ओजस्वीनी वाणी में पूर्ण स्वराज्य का समर्थन करते हुए एक बार उन्होने लिखा था, "कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है। कोई कितना ही करे, जो स्वदेशी राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है।" इसी सन्दर्भ में लार्ड नार्थब्रुक के सुरक्षा देने के अनुरोध को उद्धृत किया जा सकता है। लार्ड के यह कहने पर - "कि आप अपने व्याख्यानों में अंग्रेजी राज्य के उपहारों के वर्णन के साथ इस शासन की अखण्डता के लिए प्रार्थना किया करें।" इनका प्रत्युत्तर था - "श्रीमन्! यह कैसे हो सकता है? मैं तो सायं प्रातः ईश्वर से यह प्रार्थना किया करता हूं कि इस देश को विदेशियों की दासता से मुक्त करें।" उनका निर्भय होकर यह नारा लगाना - भारत भारतवासियों का है, इसी बात का द्योतक है कि स्वराज्य का स्वप्न पहले पहल उसी राष्ट्रपुरुष ने देखा था। पुनः उनकी रचनाओं - 'सत्यार्थप्रकाश', 'आर्याभिविनय' तथा 'गौकरुणानिधि' में जहां कहीं भी स्वदेश की चर्चा हुई है, उनकी उत्कट देशभक्ति का स्रोत फूट पड़ा है। इन कथनों एवं उद्धरणों से स्पष्ट हो जाता है कि महर्षि इसे एक अखण्ड एवं

वैभवशाली राष्ट्र के रुप में देखने के उत्कट अभिलाषी थे। यहां यह उल्लेखनीय है कि वे परम राष्ट्रवादी होते हुए भी पूर्णतया प्रजातन्त्रवादी थे। उनका निश्चित मत था कि राज्य की सत्ता वंश-परम्परागत अथवा एकसत्तात्मक न होकर प्रजा द्वारा सर्वसम्मति से नियुक्त योग्य राष्ट्राध्यक्षों द्वारा संचालित होनी चाहिए। महर्षि के अनुसार प्रजातन्त्रात्मक प्रणाली की सफलता तभी है, जब राजा, प्रजा और सभा तीनों पर एक दूसरे का अंकुश वा नियन्त्रण हो।

अतएव कहा जा सकता है कि आज हमारा राष्ट्रीय मन्दिर स्वतन्त्रता की जिस नींव एवं राष्ट्रीय गठन तथा जनजागृति की जिस दृढ़भित्ति पर प्रस्थापित है, उसे तैयार करने का श्रेय महर्षि को ही है। पुनः आधुनिक भारत के राजनीतिक ढांचे की अधिकतर विशिष्टताएं उसी जगदगुरु की देन है। विभिन्न विद्वानों एवं महापुरुषों ने उन्हें सच्चे अर्थों में देशभक्त, राष्ट्रवादी एवं राजनीति शास्त्र की नींव रखने वाला मानकर उनके प्रति श्रद्धा व्यक्त की है।

सामाजिक क्षेत्र में भी महर्षि का स्मरण नवोदय के अग्रदूत के रुप में बड़े आदर से किया जाता है। इतिहास साक्षी है कि वह युगम्रष्टा अब पथप्रदर्शक के रुप में जनता के समक्ष उपस्थित हुआ, तब उस समय एक ओर राजाओं के नैतिक पतन एवं आलस्य के कारण अव्यवस्था फैली हुई थी, तो दूसरी ओर मठाधीशों की सम्पत्ति हड़प करने की भावना से सामाजिक एवं धार्मिक जीवन विश्रृङ्खलित हो गया था। आत्मप्रवंचना एवं छलछिद्र के उस भयावह वातावरण के अतिरिक्त हिन्दुत्व अन्ध-परम्पराओं निष्प्राण परिपाटियों एवं कुरीतियों-बाल विवाह, बहुविवाह, वृद्धविवाह एवं सतीप्रथा आदि में आबद्ध था। यही नहीं जन्मगत जातपात और छुआछूत की अनुल्लंध्य दीवारें भी खड़ी थी। घर से सत्य की खोज में निकले उस कर्मठ महापुरुष एवं निर्मम सुधारक ने एक महारथी बनकर सामाजिक क्षेत्र में भी क्रान्ति का मन्त्र फूंका एवं आयुपर्यन्त उन कुरीतियों पर निर्मम प्रहार कर भारतवासियों को आर्यधर्म की ज्योति दिखाकर उदात्त एवं स्वस्थ जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा दी। महर्षि का देश के कोने-कोने में घूमकर राजा-रंक व छोटे-बड़े सभी प्रकार के लोगों से सीधा सम्पर्क स्थापित कर दलितोद्धार एवं वैदिक वर्णाश्रम-व्यवस्था स्थापित करने में लगे रहना तथा जाते समय जनजागरण के इस महत् कार्य को आर्यसमाज को सौंप जाना निस्सन्देह उनके प्रगतिशील व्यक्तित्व को प्रकट करता है। महर्षि का स्पष्ट आदेश था- आर्यावर्त्त, उठ जाग! समय आ गया है, नये युग में प्रवेश कर, आगे बढ़।

सांस्कृतिक आदर्शों-धार्मिक, शैक्षणिक एवं मानवीय मूल्यों की प्रतिस्थापना में नवोदय के अग्रदूत राष्ट्रपुरुष महर्षि दयानन्द का योगदान महत्वपूर्ण एवं स्तुत्य है। महर्षि के ग्रन्थों में स्वराज्य और भावनात्मक एकता के बाद जो भी कुछ प्राप्त होता है, उसका मुख्य सूत्र सार्वजनिक धर्म है। यहां कहा जा सकता है कि वे एक ऐसे सर्वहितकारी सनातनधर्म के जन्मदाता थे, जिसमें नवीन लेशमात्र भी नहीं था। यही कारण था कि आर्यसमाज की स्थापना संकीर्ण व साम्प्रदायिक दृष्टिकोण की अपेक्षा आर्य सिद्धान्तों, जीवन-तथ्यों एवं उदात्त राष्ट्रीय भावनाओं को लेकर की गई थी। महर्षि की दृष्टि में आर्य वही था- जो श्रेष्ठ स्वभाव, सद्-असद् विवेक, परोपकार एवं धर्माचरण से युक्त हो। यही कारण था कि उन्होने भारतीयों को आर्य, भारत को आर्यावर्त्त और हिन्दी को आर्यभाषा का नाम दिया। अतः आर्यसमाज को एक वर्ग व जाति का नाम देना व सत्यार्थप्रकाश को इसी संस्था की सम्पत्ति बताना अनुचित है। महर्षि ने सत्यार्थप्रकाश में बिना किसी पक्षपात के जो सत्य है उसे सत्य और जो मिथ्या है उसे मिथ्या प्रतिपादित करने का पुनीत कार्य निभाया है। धर्म की इसी व्यापकता एवं यथातथ्यप्रकाश से मुग्ध होकर नोबल पुरस्कार विजेता कविवर

रवीन्द्रनाथ ने ऋषिवर को आध्यात्मिक क्षेत्र का महान् गुरु स्वीकार किया। महर्षि जहां सत्य और अहिंसा के पुजारी थे, वहां राष्ट्र की एकता स्थापित करने हेतु वे बड़े से बड़ा त्याग भी कर सकते थे। उनका दृढ़ विश्वास था कि - एक धर्म, एक भाषा और एक लक्ष्य की प्राप्ति ही भारत की पूर्णोन्नति के साधक है। भिन्न-भिन्न भाषा, पृथक्-पृथक शिक्षा, अलग-अलग व्यवहार का विरोध छूटना दुष्कर है, पर बिना इसके छूटे परस्पर का पूरा उपकार और अभिप्राय सिद्ध होना कठिन है। यही कारण था कि उन्होने देशी राजाओं और रईसों को समय-समय पर क्षात्र धर्म का उपदेश देकर एकता के सूत्र में पिरोने के कई सत्प्रयास किए। पुनः महर्षि युगद्रष्टा थे, उन्होने आज के सैकड़ों पूर्व यह जान लिया था कि हिन्दी ही राष्ट्रभाषा बन सकती है। अतएव उन्होने अपनी मातृभाषा गुजराती एवं शिक्षा का माध्यम संस्कृत को छोड़कर हिन्दी का आंचल ग्रहण किया और उसे सारे आर्यावर्त्त में आर्यभाषा का नाम देकर प्रसारित किया। इसके अतिरिक्त आर्यस्कूलों में उन्होने जिस नैतिक उच्चता, सत्याचरण, त्याग, तपस्या एवं कर्मठता की भावना पर बल देकर सापेक्ष्य सहिष्णुता तथा उदारता का प्रशिक्षण देना चाहा, उससे प्रकट हो जाता है कि वे नैतिक पुनरुत्थान द्वारा भारतीय समाज का नवनिर्माण करना चाहते थे।

पुनः आर्यजाति के लिए प्रतिपादित महर्षि के दस नियमों का सार ही यही है कि सत्य का अन्वेषण, सत्य का अंगीकार और सत्य का निश्छल प्रचार ही हमारे ज्ञान का आधार होना चाहिए। धर्मान्धिता कुबुद्धि है, उसे हृदय में कदापि स्थान न दें। सत्य का प्रकाशन करते हुए पक्षपात रहित न्याय को हाथ से न जाने दें। मनुष्यमात्र से प्रेम करना मनुष्य का जन्म सिद्ध अधिकार है, अतः उनके शोक-दुख में देश-विदेश, उच्च-नीच, अमीर-गरीब के भाव को त्याग कर उनसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार एवं यथायोग्य वर्तावि करना अपेक्षित है। ये सभी उच्चतम मानवीय आदर्श एवं सर्वहितकारी दृष्टिकोण वस्तुतः पंचशील के प्राख्यात है।

संक्षेपतः भारत-निर्माताओं में प्रथमकोटि के युग पुरुष महर्षि दयानन्द को निश्चित रुप में भारतीय नवोदय का अग्रदूत कहा जा सकता है। बौद्धिक क्रान्ति के जन्मदाता उस महामानव ने तत्कालीन दीन-हीन भारतीय समाज को एक नई दृष्टि, नया विचार एवं नई भावना प्रदान की। उस महान् शिक्षक का एक राष्ट्र, एक भाषा, एक मानवधर्म एवं एक लक्ष्य की प्रतिष्ठा द्वारा जनता को राष्ट्रीय, राजनीतिक एवं शैक्षणिक दृष्टि से एकता सूत्र में आबद्ध करने का सत्प्रयास इसी दिशा की ओर एक सशक्त चरण था। एतदर्थ उन्होने स्वयं आदर्श बनकर जहां दीर्घकाल से लुप्त सत्य और भारतीय गौरव को प्रत्यक्ष किया, वह मानव-जीवन की सर्वांगीण उन्नति का व्यावहारिक मार्ग भी प्रदर्शित किया। निस्सन्देह महर्षि के समान सत्य का साधक, निर्भीक सन्त, बौद्धिक क्रान्ति का जन्मदाता, समर्थ शिक्षक, भाव-भाषा के ऐक्य का सशक्त प्रतिष्ठा परक महानुभाव मिलना दुर्लभ है।

आइए, महर्षि दयानन्द की पुण्यतिथि दीपमालिका के अवसर पर उनके लिए सच्ची श्रद्धांजलि हम आर्यों की यही होगी कि हम निर्भीक साधना सत्य की करते हुए समाज को अज्ञान से हटाकर ज्ञान की ओर प्रवृत्त करें तथा एक ऐसा भारत जो समता एकता सहजता व सरलता के साथ-साथ अखण्डता से परिपूर्ण हो के निर्माण में हम स्वयं अपनी क्षमता योग्यता के साथ कुछ योगदान दें, तभी महर्षि दयानन्द के सपनों का भारत बना पाने में हम सक्षम हो सकेंगे।

- आचार्य कर्मवीर

"वेद" मनुष्य को मनुष्य बनने का सन्देश देता है

- ओमप्रकाश आर्य

वैचारिक

सुन्दर है विहग सुमन सुन्दर,
मानव तुम सबसे सुन्दरतम्,
निर्मित्त सबकी तिल सुषमा से
तुम निखिल सृष्टि में चिर निरुपम।
क्या कमी तुम्हें है त्रिभुवन में
यदि बने रह सको तुम मानव॥

मनुष्य इस सृष्टि का सर्वोत्कृष्ट प्राणी है। संसार में एक से एक सुन्दर फूल और एक से एक सुन्दर पक्षी मिलेंगे, पर मानव उनमें सबसे सुन्दर है। यदि वह मनुष्य बनकर रहे तो उसे इस धरती पर किसी चीज की कमी नहीं होगी।

इसी सुन्दर रचना मानव, अपने को विभेद के जाल में फंसाकर एक-दूसरे का रक्त-पिपासु बन रहा है। वह अपने को एक-दूसरे से अलग-अलग मानता है। यही अलगाववृत्ति विभिन्न समस्याओं का कारण है। आखिर इसके पीछे क्या कारण है ? इन सबके पीछे जो मुख्य कारण है, वह है-धर्म। धर्म को लेकर अनेक सम्प्रदाय मत-मतान्तर आदि फैले हुए हैं। क्या सबका धर्म अलग-अलग हो सकता है ? नहीं। मानव का धर्म अलग-अलग नहीं हो सकता। मानव का धर्म एक है। वह है मानवीय गुण। यदि हमारे अन्दर मानवीय गुण है तो हम धार्मिक है और मानव है, क्योंकि धर्म का शाब्दिक अर्थ है जो धारण करने के योग्य हो। अर्थात् वह गुण जो मानव को धारण करने के योग्य हो। इसी को और प्रकाशित करते हुये मनु महाराज लिखते है -

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्॥

अर्थात् धैर्य, क्षमा, मन को वश में करना, चोरी न करना, अन्दर-बाहर की पवित्रता, इन्द्रियों के ऊपर नियंत्रण, बुद्धि, विद्या, सत्य, क्रोध न करना - ये दस धर्म के लक्षण हैं। इन्हें धारण करने वाला मनुष्य धार्मिक कहलाता है। जिनके अन्दर ये गुण नहीं होते वह धार्मिक नहीं कहा जा सकता। इन गुणों को कोई भी हो या कोई भाषा बोलता हो, कैसी भी वेशभूषा धारण करता हो। ये गुण मानवमात्र को धारण करने योग्य है। इन गुणों को धारण करते ही मानव के अन्दर से घृणा, द्वेष, ईर्ष्या, हिंसाभाव, कटुता, अलगाव, वैमनस्य आदि सारी बुराईयां स्वतः दूर होती चली जाएंगी। आन्तरिक सद्भावना के लिए यह सर्वोत्तम बूटी है। इसी बूटी का सेवनकर मनुष्य मनुष्य से प्रेम कर सकता है और हृदय की कटुता को समाप्त कर सकता है। इन्हें धारण करके ही मनुष्य एक दूसरे को सुख-दुःख में सहभागी हो सकता है। प्रत्येक मानव को इन गुणों को धारण करना चाहिए तभी वह धार्मिक और मानव कहलाने का अधिकारी हो सकता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती **'स्वमंतव्यामंतव्यप्रकाश'** नामक पुस्तक में लिखते हैं - **"मनुष्य उसी को कहना जो मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों को सुख-दुःख और हानि-लाभ को समझे।"** अर्थात् मनुष्य मननशील होता है, वह दूसरों के सुख-दुःख को अपना सुख-दुःख समझता है, दूसरों के हानि-लाभ को अपना हानि-लाभ समझता है। यदि हम अपने को मनुष्य कहते है और अपने को धार्मिक मानते हैं तो हमें मननशील होना है, मानव को मानव के निकट ला सकती है। आज धर्म के नाम पर बवंडर खड़ा हो जाता है। पर धर्म तो उस बवंडर से बहुत दूर है। धर्म झगड़ा-फसाद नहीं कराता। धर्म तो मनुष्य को सुन्दर आचरण प्रदान करता है। महर्षि दयानन्द जी लिखते हैं - "जो पक्षपातरहित, न्यायाचरण, सत्यभाषणादियुक्त, ईश्वराज्ञा, वेदों से अविरुद्ध है उसको धर्म मानता हूँ।" वास्तव में धर्म और कोई बाहरी आडम्बर नहीं है, धर्म कोई बाहरी वस्तु नहीं है, धर्म तो सत्ययुक्त आचरण को कहते हैं, धर्म तो सत्य बोलने को कहते हैं, धर्म तो न्याय करने को कहते हैं। ये समस्त गुण मानव के अन्दर होने चाहिए, तभी वह अपने को

धार्मिक कह सकता है। इन गुणों को धारण करते ही मानव मानव बन जाएगा और वह सबसे प्रेम करने लगेगा, वह समस्त संकीर्णताओं से ऊपर उठ जाएगा।

वेद कहता है- मनुर्भव। अर्थात् मनुष्य बनो। वेद किसी को हिन्दू, किसी को मुसलमान, किसी को सिख, किसी को ईसाई बनने का आदेश नहीं देता। वेद तो प्रत्येक मनुष्य को मनुष्य बनने का संदेश देता है। मनुष्य बनने से इस धरती पर से सारी समस्याएं समाप्त हो जाएगी। आज के युग की सबसे बड़ी मांग और आवश्यकता है - मनुष्य बनने की। विज्ञान की सारी प्रगति अधूरी है यदि मनुष्य मनुष्य नहीं बनेगा। मनुष्यता में कोई जाति नहीं होती, मनुष्यता में कोई सम्प्रदाय नहीं होता, मनुष्यता में कोई मजहब नहीं होता। मनुष्यता में तो मानव के दैवीय गुण होते हैं। जिन गुणों के कारण वह महकता है, लिखा है -

महक फूलों में ही नहीं होती, इंसान भी महकते हैं,
चमक आग और बिजली में ही नहीं होती
इंसान भी चमकते हैं।
धरती की धूल धन्य हो जाती है
जब इंसान इंसान बनकर रहते हैं॥

आखिर इंसान महकेगा कैसे ? उसके महकने के लिए कौन से आन्तरिक गुण होने चाहिए ? वे आन्तरिक गुण है - दया, क्षमा, प्रेम, करुणा, सहानुभूति, सहयोग, मैत्री, उदारता, परोपकार, सेवा, अहिंसा आदि। इन गुणों को अपनाते ही मनुष्य महकने लगता है। इन गुणों को अपनाते ही मनुष्य महकने लगता है। ये ही गुण मानव के अन्दर सौहार्द्र पैदा कर सकते हैं, इन्हीं से सद्भाव स्थापित हो सकता है। हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई का भाव इन्हीं गुणों से दूर हो सकता है। हमें विचार करके इन गुणों को अपने अन्दर धारण करने चाहिए। तभी हम मनुष्य कहलाने के अधिकारी हो सकते हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती - **"आर्योद्देश्यरत्नमाला"** नामक पुस्तक में लिखते हैं - **"मनुष्य अर्थात् जो विचार के बिना किसी काम को न करे उसका नाम मनुष्य है।"** इस प्रकार मनुष्य उसे कहते हैं जो विचार करके प्रत्येक कार्य को करता है। बिना विचारे काम करने से अनेक समस्यायें उठ खड़ी होती हैं। मनुष्य को भगवान ने मननशील बनाया है, अतः हमें मननशील होना चाहिए। हमें मानव की झूठी जातियों में विश्वास नहीं करना चाहिए। मानव की जाति अलग नहीं हो सकती। मानव की जाति मानव की जाति है। जैसे - घोड़ा, बैल, हाथी, भेड़, बकरी आदि की जाति अलग-अलग होती है, उसी प्रकार मनुष्य की एक ही जाति होती है। यह जन्म से लेकर मृत्यु तक बनी रहती है। घोड़ा जीवनभर घोड़ा रहता है, बैल जीवन भर बैल रहता है, हाथी जीवनभर हाथी रहता है, उसी प्रकार मनुष्य भी जीवनभर मनुष्य जाति के रुप में रहता है। वह न हिन्दू है, न मुस्लिम है, न सिख है, न ईसाई। वह है तो केवल मनुष्य जाति का है। फिर हम मानव परस्पर क्यों अपने को अलग-अलग मानकर चलते हैं। हमारे कर्म अलग-अलग हो सकते है, हमारे पहनावे अलग-अलग हो सकते हैं। हमारी बोली भाषा अलग-अलग हो सकती है, पर हमारी मनुष्य की जाति अलग-अलग नहीं हो सकती। हमें अपनी सोच बदलनी होगी। हमें चिन्तन करना होगा। हमें मानवीय गुणों को अपने अन्दर धारण करने होंगे, तभी हमारे जीवन में सुख-शांति, आनन्द, अमन-चैन आ सकेगा। उपनिषद कहती है -

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किंचित् जगत्यां जगत्।
तेन व्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्॥

अर्थात् यह संसार ही प्रभुमय है। प्रभु सबमें समाया हुआ है। जो कुछ हम देख रहे हैं सबमें परमात्मा व्याप्त है, इस लिए त्यागपूर्वक धन का उपभोग करो। किसी के धन की लालसा मत करो। जब सबमें प्रभु समाया है तो फिर हम उसी एक परमपिता की सन्तान हुए। जब हम एक परमपिता की सन्तान हैं, तो हम सब अलग-अलग कैसे ? वास्तव में हम अलग-अलग हैं ही नहीं। हम सब मानव एक हैं। केवल हमारे कर्म अलग-अलग हो सकते हैं। वेद कहता है -

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत् बाहूराजन्य कृतः।
उरु यदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रोऽजायत॥

अर्थात् शिक्षा देने वाला इंसान ब्राह्मण पदवी को धारण करता है, रक्षा करने वाला क्षत्रिय पदवी को धारण करता है। पालन-पोषण करने वाला वैश्य पदवी को और सेवा करने वाला शूद्र पदवी को धारण करता है। ये चारों उपाधियां हैं ये जाति नहीं है। इन उपाधियों को कोई भी

कर्मानुसार धारण कर सकता है। जब ये कर्मानुसार उपाधियां है फिर हम अपने को हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई क्यों कहते हैं ? अपने को अलग क्यों मानते हैं ? परमपिता परमात्मा ने सबको समान बनाया है। वह हमारे चिन्तन और कर्म के ऊपर है कि हम अपने को कहां तक उसके गुणों को धारण कर सकते हैं। आज यदि किसी चीज की कमी है तो बस प्रेम की। मानव मानव से प्रेम करें, बस सारी अशान्ति, भीति दूर हो जाएगी। अतः हम सबको चाहिए कि हम मानव बनें, केवल मानव। मानव के गुणों को धारण करें। इस स्वर्गिक धरती का सम्राट बनें और सुख-शांति-आनन्द को प्राप्त करें।

– पता आर्यसमाज रावतभाठा, वाया-कोटा (राजस्थान) ३२३३००७

कविता

"दीपावली"

दीपावली है अन्धकार पर प्रकाश की विजय का त्यौहार।
इसलिए छोड़ दो अन्धविश्वास, पाखण्ड, जिनका नहीं है कोई आधार॥
दीपावली है अन्याय पर न्याय की विजय का त्यौहार।
मिटाते रहो अन्याय, स्थापित करो न्याय, यही है "गीता" का सार॥
दीपावली है अधर्म पर, धर्म की विजय का त्यौहार।
अन्य मतो को छोड़, वैदिक धर्म अपनाओं जो देता है आत्मा को आहार॥
दीपावली है बेईमानी पर, ईमानदारी की विजय का त्यौहार।
जीवन में यदि उन्नत होना चाहो तो करो सभी से ईमानदारी का व्यवहार॥
दीपावली है कूड़ा-कर्कट पर, सफाई की विजय का त्यौहार।
कूड़े-कर्कट से करो सदा नफरत और सफाई से करो हमेशा प्यार॥
दीपावली है हंसो और हंसाओ और, सबको प्रसन्न रखने का त्यौहार।
सबसे रखो अच्छा व्यवहार, मत करो किसी भी प्राणी पर अत्याचार॥
अधिकतर लोग समझते है, इसे रावण पर राम की विजय का त्यौहार।
जो भी हो, इससे सीखें, कैसे आवें मेरे जीवन में राम के संस्कार॥
दीपावली का त्यौहार हमें सिखाता है, सबसे करना प्यार।
न कभी किसी पर जुल्म करो, न करो किसी से गलत व्यवहार॥
यदि करोगे हमेशा हर व्यक्ति से प्यार और रखोगे सबसे सद् व्यवहार।
तभी हम कह सकेंगे, मनाया हमने सही अर्थों में दीपावली का त्यौहार॥
दीपावली है बुराईयों को छोड़, अच्छाईयों को अपनाने का त्यौहार।
कहता है "खुशहाल" इस सिद्धान्त को लो अपने जीवन में उतार॥

रचयिता – खुशहाल चन्द्र आर्य
गोविन्दराम आर्य एण्ड संस, १८०, महात्मा गांधी रोड, दो तल्ला, कोलकाता-७००००७

निर्वाण दिवस पर विशेष

आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द

– सुश्री अंजलि आर्या

> दीपावली के दिन ऋषिवर ने जग से नाता तोड़ा था,
> जगतपिता जगदीश्वर से योगी ने नाता जोड़ा था।
> किया वेद प्रचार जगत में, कभी नहीं ऋषि घबराया।
> कर्म प्रधान बताया जग में, मोक्ष मार्ग था दर्शाया ॥

स्वामी दयानन्द विलक्षण एवं बहुआयामी प्रतिभा सम्पन्न थे, उनके जीवन के विविधि आयाम विभिन्न क्षेत्रों में उनके द्वारा किए गए कार्य इतने अधिक हैं कि उनका वर्णन एक लेख में कर पाना संभव नहीं है, फिर भी उनके द्वारा किए गए आर्यसमाज के कार्यों की संक्षिप्त चर्चा करने का प्रयास करते हैं। मनुष्य देव दयानन्द सरस्वती के महान् उपकारों के लिए हम विश्व के प्रत्येक मानव, स्त्री अथवा पुरुष कृतज्ञ हैं।

आर्य कहलाने वाले क्या कभी अपने हृदय पर हाथ रखकर सोचा कि हम महर्षि के प्रति कितना कृतज्ञ हैं अथवा कितना कृतघ्न। हमारी सबसे बड़ी भूल है कि हम ऋषि दयानन्द को ही नहीं समझ पाए। जब उसे बिना समझे ही हमें यहां सब कुछ मिल गया तो कौन झक मारे। अब कोई दयानन्द को न समझे न सही लेकिन महर्षि दयानन्द निमित्त आर्यसमाज को तो जीवित रखें।

१० अप्रैल १८७५ में सर्वप्रथम महर्षि ने मुंबई में आर्यसमाज की स्थापना की उनकी कृपा से आज आर्यसमाज जीवित है उनके आधार पर मैं कह सकती हूँ महात्मा मुंशीराम जो आगे चलकर स्वामी श्रद्धानन्द बनें। सच को आत्मसात् न कर सके यह मनुष्य की समर्थ से बाहर है। पोथी पढ़कर पण्डित होना अलग बात है तथा सत्य को समझना उससे आगे है। विचार करें- श्रद्धानन्द पतन के गढ्ढे से निकलकर महानता के उच्च शिखर पर कैसे पहुंच गए ? संसार में उच्च प्रतिभाशाली व्यक्ति अनेक हुए हैं, किन्तु इन सब में हमें ज्वाला दिखाई नहीं देती, जिससे वे दूसरों को प्रतिष्ठ कर सकें, किन्तु हमें स्वामी दयानन्द के गुण ही दिखाई पड़ते हैं। इसमें नहीं जबकि आर्य अर्थात् जो श्रेष्ठ स्वभाव वाला धर्मात्मा परोपकारी, सत्यविद्यादि गुणयुक्त और आर्यावर्त्त देश में सब दिन से रहने वाले हैं, उनको आर्य तथा आर्यों के समूह को आर्य समाज कहते हैं। इस समाज में आकर गुरुदत्त विद्यार्थी, पं. लेखराम जी का नाम जोड़ा जाए तो कोई असंगत नहीं। जैसे स्वर्ण को भट्टी में तपाने से अधिक चमकने लगता है उसी प्रकार की आग सनातन आर्य धर्म को पवित्र, स्वाभाविक रीति में लाने के लिए आर्यसमाज रूपी भट्टी में जलाई गई थी। यह पवित्र अग्नि भारतवर्ष के एक पवित्र योगी दयानन्द सरस्वती के हृदय में जागृत हुई थी। विश्व के अधिकांश देशों में आर्य समाजें हैं, वैदिक धर्म का कार्य हवन, सन्ध्या, सत्संग, उत्सव, योग आदि स्थान-स्थान पर हो रहा है। ऋषि दयानन्द ने वेद को समस्त मूल माना है। उन्होने समस्त दार्शनिक धार्मिक व आध्यात्मिक विषयों को ज्ञान, कर्म, उपासना चार भागों में बांटकर अपने साहित्य वेद मन्त्रों के आधार पर तर्क और व्यवहार की कसौटी पर व्याख्यान किया। स्वामी जी का जीवन आध्यात्मिकता के कारण अति प्रसिद्ध था।

मैं सादर प्रणाम करती हूँ उस महापुरुष दयानन्द को जिसकी दृष्टि से भारत की आत्म गाथा में सत्य और एकता का बीज देखा, जिसकी प्रतिभा में भारतीय जीवन के विविध अंगों को प्रसिद्ध कर दिया। जिसका उद्देश्य देश को अविद्या, अकर्मण्यता और प्राचीन ऐतिहासिक लक्ष्य विषयक अज्ञान से मुक्त कर पवित्रता को जागृत कर दिया उस गुरु को मेरा बार-बार प्रणाम। दयानन्द की जय आर्यसमाज अमर रहे की जयघोष बोल बोलकर आसमान सिर पर उठा लेते हैं। जब बात उनके आदर्शों व वैदिक सिद्धान्तों की आती है। शुतुरमुर्ग की तरह रेत में सिर व बात को टालने का प्रबल पुरुषार्थ करते

रहते है। इसलिएजहां सच्चिदानन्द स्वरुप है वहां रुद्र भी है। महर्षि लिखते हैं - **"रोदयति अन्यायकारिणो जनान् स रुद्रः"** अर्थात् अन्यायकारियों को खूब रुलाता है, खूब रुलाता है। उन्होंने आर्यों के आचरण हेतु आर्यसमाज के दस नियमों का उल्लेख किया। फिर भी हम वेद विद्या पतित पावनी परम कल्याणी ज्ञानधारा को पाकर भी जघन्य पाप व अकल्याण कर रहे हैं। उन्नति करना चाहें तो आर्यसमाज के साथ मिलकर उनके आदेशानुसार कार्य करना स्वीकार कीजिए। आप और हम को यही उचित है कि जिस देश के पदार्थों से हमारा शरीर बना है और अब भी पालन-पोषण पाता है, उस आर्यावर्त्त की हम तन-मन-धन से उन्नति करें। आर्यसमाज की प्रतिष्ठा भारतीयों में एक नए जीवन की प्रतिष्ठा हैं, आज जो जागरण भारत में दिख पड़ता है, उसका सम्पूर्ण श्रेय आर्यसमाज है।

आर्यसमाज के स्थापना का विषय आया तो दयानन्द ने पुनः स्पष्ट किया कि आप यदि पुरुषार्थ कर परोपकार कर सकते हो तो समाज की स्थापना कर लो। भारत में पच्चीस कोटि के आर्य हैं परन्तु यथोचित व्यवस्था नहीं रहे तो गड़बड़ाध्याय हो जाएगा। ऋषि दयानन्द की आर्य समाज स्थापना विषयक टिप्पणी से स्पष्ट हो जाता है कि वे किसी नये सम्प्रदाय को जन्म देने के पक्ष में बिल्कुल नहीं थे। आरम्भ में इसके अठाईस नियम बनाए गए जिनमें मूल सिद्धान्तों के उल्लेख के साथ-साथ सभा संचालन की व्यवस्थाओं का संकलन किया गया था आगे जलकर १८७७ में जब पंजाब की राजधानी लाहौर में आर्यसमाज की स्थापना हुई तो सर्वसम्मत विचार के पश्चात् आर्यसमाज के सिद्धान्तों के प्रतिपादक दस नियमों का पृथक निर्धारण कर व्यवस्था सम्बन्धी उपनियमों का पृथक संकलन किया गया। तब से आज तक दस नियम आर्यों के मार्गदर्शक बने हुए हैं।

दयानन्द के मन्तव्यों को जानने के लिए उनके ग्रन्थों की भौतिक प्रवचनों की सहायता ली जा सकती है। महर्षि के अनुयायियों! दयानन्द का तप, स्वामी श्रद्धानन्द की साधना, पं. लेखराम की ललकार, पं. गुरुदत्त का गौरव, आचार्य चमुपति की चेतना, स्वामी वेदानन्द की वेदना हम सबकों आह्वान कर रही है। शराबी पीकर अपना शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, पारिवारिक, सामाजिक सर्वनाश करना। आर्यसमाज जैसे पावन संस्था में रहकर बहुआयामी विनाश ने हमारी भागीदारी तय कर देता है। जब सत्य और असत्य में संघर्ष हो तो असत्य के पक्ष में खड़े होकर असत्य से समझौता करने कराने का प्रयास हमें धृतराष्ट्र जैसी दुर्गति तक ले जाता है। अन्त में आंसुओं के सरोवर में डूबकर **"असूर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसावृतः"** के वेदोपदेश के आगे सिर झुकाना ही पड़ता है। सत्य एवं सदाचार के बिना आर्यसमाज को समझा ही नहीं जा सकता। आखिर हमें पश्चाताप के आंसु पीने पड़ते हैं।

स्वामी जी ने आर्यसमाज के साथ-साथ गुरुकुलीय शिक्षा, नारी शिक्षा, बाल विवाह, सती प्रथा, वेदाधिकार आदि सैंकड़ों कार्य किए जिसका उल्लेख हम करने में असमर्थ हैं। इसे मैं एक उदाहरण देकर स्पष्ट करना चाहती हूँ। कि एक बार एक पथिक ने प्रकृति के सौंदर्य को देखकर राह में चलते हुए अन्य पथिक से कहा गुलाब का फूल कितना सुन्दर और कितना सुंगधित है काश इसमें कांटे नहीं होते तो कितना अच्छा होता। पथिक पुनः आगे चलकर एक कोयल की मीठी आवाज सुनकर कहा - काश कोयल काली नहीं होती कितना अच्छा होता। पथिक ने पुनः आगे चलकर समुद्र को देखकर कहता है - काश यह सागर का पानी खारा न होता तो कितना अच्छा होता। अतः हमें मौन होकर कहना पड़ता है कि महर्षि की मृत्यु असमय से नहीं होती तो कितना अच्छा होता। परन्तु परमात्मा ने प्रकृति में जो नियम बनाए हैं उसे कोई नहीं टाल सकता। अतः हमें आयु न देखकर उनके गुण व आदर्श का ध्यान रखते हुए उनके अनुगामी होने का प्रयास करना चाहिए। अतः ऋषि ऋण से मुक्त होने के लिए उनके स्वप्नों को पूरा करना होगा। आर्यसमाज क्षेत्र की उपेक्षा समाप्त करनी होगी तभी कृण्वन्तो विश्वमार्यम् घोष साकार होगा।

जननी जन्म भूमि हेतु जिसने सुख जीवन त्यागे।
झुका धरा का सारा वैभव, जिसके तप के आगे॥
जो था कृतसंकल्पी भूमि पर आर्यों के उत्थान को।
आओ अर्पित करे श्रद्धा सुमन,
उस देव ऋषि पुण्य महान को॥

पता : कन्या गुरुकुल पञ्चगाँव, भिवानी (हरयाणा)

दीपावली पर्व पर विशेष

– स्व.आचार्य भद्रसेन

महर्षि के विचार दीपों की अमरज्योति

भारतीय परम्परा में अधिकतर महापुरुषों के जन्म दिन मनाये जाते हैं। परन्तु जिन महापुरुषों की मृत्यु किसी विशेष घटना के रूप में घटित हुई है, उनके शहीदी दिवस भी समारोह पूर्वक सम्पन्न होते हैं। महर्षि दयानन्द की मृत्यु स्वाभाविक नहीं थी, वह अपने पीछे एक विशेष पृष्ठभूमि रखती है। जैसे कि यह बात पूर्णतः स्पष्ट है कि अन्तिम दिनों में महर्षि के सारे शरीर पर फफोले पड़ गये थे और उन्हें बहुत बड़ी संख्या में दस्त भी आये थे। डाक्टर के इलाज से रोग उलटा बढ़ा था। उन दिनों की सारी घटनाएँ महर्षि की मृत्यु को एक योजनाबद्ध षड़यंत्र सिद्ध करती है। जब महर्षि को जोधपुर से लाया जा रहा था, तो मार्ग में एक डाक्टर (लक्ष्मण) अकस्मात् मिला, पता लगने पर उसने इलाज किया, जिससे कुछ लाभ हुआ। उसने महर्षि के पास रहकर उपचार करना चाहा, पर न तो उसका अवकाश स्वीकार किया गया और न ही त्यागपत्र।

महर्षि ने अपने जीवन के अन्तिम दिनों जिस प्रकार रियासतों के राजाओं को प्रभावित करना प्रारम्भ किया था और भारतीय जनता पर महर्षि के प्रचार का जिस प्रकार से अमिट प्रभाव पड़ रहा था, इसी के परिणामस्वरूप नवजागृति के साथ भारतीयों को एक सूत्र में पिरोने का प्रयास प्रारम्भ हो गया था। वह तात्कालिक विदेशी सरकार को नहीं सुहाया। तब महर्षि के विरुद्ध एक षड़यंत्र रचा गया, जो कि उनके निधन का कारण बना। अतः महर्षि की मृत्यु की घटना शहीदी पर्व की तरह अविस्मरणीय है। महर्षि के मृत्युकाल का वह घटना-चक्र अपने आप में एक अनूठा प्रसंग है। क्योंकि उसको देखने वाले साधारणजन ही नहीं अपितु बड़े-बड़े डाक्टर भी दंग थे। इतना अधिक शारीरिक कष्ट होने पर भी महर्षि ने बड़ी शान्ति और धैर्य के साथ इसे सहा तथा सहर्ष स्वयं मरण को स्वीकार किया। जिसको देख मनीषी गुरुदत्त एम.ए. नास्तिक से आस्तिक बनकर महर्षि के लक्ष्य को पूर्ण करने में अनवरत तत्पर हो गये।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन, विचार एवं कार्य भी अपने आप में एक अनुपम उदाहरण है। उन्नीसवीं शताब्दी में महर्षि ने एक वैचारिक क्रान्ति की। महर्षि के विचार व्यावहारिक, प्रगतिशील, जीवन्त, तर्कसंगत ही नहीं अपितु भारतीय शास्त्रों से प्रमाणित भी थे। अर्थात् जो भारतीय साहित्य और संस्कृति सहस्रों वर्षों से विद्यमान थी, परन्तु कुछ ने उसके समग्र स्वरुप को सामने न रखकर उसका एकांगीपन ही प्रचलित कर दिया। जिसके परिणामस्वरुप एक ईश्वर के स्थान पर अनेक देवी-देवताओं का पूजन, जन्मना ऊँचा-नीचापन, सामाजिक, छूआछूत, स्त्री शिक्षा

हृदय विदारक – महर्षि का अन्तिम प्रयाण दृश्य

का विरोध और अनमेल विवाह आदि मान्यताएँ भारतीयों में प्रचलित हो गयी। महर्षि दयानन्द ने भारतीय शास्त्रों के प्रमाणों से ही उपर्युक्त रूढ़ियों का निराकरण करके जीवन का एक तर्कसंगत, जीवन्त, व्यावहारिक रूप उपस्थित किया। इस सम्बन्ध में अधिक लिखने की अपेक्षा हिन्दी भाषा जानने वालों के लिए महर्षि के अपने वाक्य अपने आप में स्वयं परम प्रमाण है। इन वाक्यों की विद्यमानता में यही कहना अधिक संगत है, कि हाथ कंगन को आरसी क्या और महर्षि के इन वाक्यों की उपस्थिति में उस सम्बन्ध में कुछ अधिक कहना सूरज को दीपक दिखाना या मुद्दई सुस्त गवाह चुस्त वाली ही बात होगी। जीवन के विभिन्न व्यवहारों के सम्बन्ध में मार्ग दर्शन करने वाले थे।

महर्षि के मन में स्वतन्त्रता प्राप्ति की तड़प उदीप्त हो चुकी थी, अतः विद्याध्ययन के कार्यक्रम को निरस्त करके नर्मदा तट संगठन के कार्य में तल्लीन हो गये। और स्वामी दयानन्द सम्वत् १९१७ में स्वामी विरजानन्द के पास मथुरा पहुंचे तथा तीन वर्ष तक विद्याध्ययन करके गुरुदक्षिणा में जीवनदानी बनकर चल पड़े। पहले शैव मतावलम्बी बन वैष्णव मत का खण्डन करते रहे तथा इसके पश्चात् शैवमत का भी खण्डन आरम्भ कर दिया। यह परिवर्तन उनके निरन्तर चिन्तन एवं स्वाध्याय का परिणाम था।

जब दुनिया रो पड़ी

एकदम लम्बा सांस लिया, फिर उसे वेग से छोड़ दिया।
इस नश्वर शरीर से तभी, आत्मा ने सम्बन्ध तोड़ लिया॥
सायंकाल छः बजे दीवाली की करोड़ों दिये जले।
तीन अक्टूबर अट्ठारह सौ तिरासी को ऋषि परलोक चले॥

स्वामी दयानन्द सरस्वती जग में सुखों के दाता थे।
बहुत बड़ा स्वाध्याय था उनका सब वेदों के ज्ञाता थे॥
महिलाओं और दलित जनों का बहुत बड़ा उद्धार किया।
आर्यसमाज के द्वारा उन्होंने दुनिया का उपकार किया॥

पाखण्डों से ऋषि दयानन्द ने जो अविराम युद्ध किया।
सही मार्ग दिखला करके भूले भटकों को शुद्ध किया॥
ब्रह्मचारी विद्वान थे और वह सत्यधर्म प्रचारक थे।
जात पात नहीं मानते थे निराकार के उपासक थे॥

उनके जीवन दर्शन से यह मेरी समझ में आया है।
स्वामी जी ने निश्चित ही मोक्षधाम पद पाया है॥
अपने सतत प्रयत्नों से प्राणी मात्र का कल्याण किया।
बड़ी अभागी रात थी वह उन्होंने जब प्रस्थान किया॥

महाकाव्य - दयानन्द गौरवगाथा (लेखक : अभयराम शर्मा 'दयानन्दी')

दयानन्द यदि **चाहते तो समाज से दूरस्थ जंगलों में जाकर घोर तपस्या से मुक्ति को प्राप्त कर लेते, किन्तु देश और समाज की मुक्ति के समक्ष आत्म-मुक्ति की बात उनके लिये बहुत ही छोटी पड़ गयी थी।** यही कारण था कि उनका स्वतन्त्र चिन्तन राष्ट्रीय मानस में नवीन प्राण फूंकने का मार्ग खोज रहा था। अपने मार्गानुसन्धान के कार्यकाल में वे यदा-कदा गुरुवर विरजानन्द जी से अवश्य मिल लेते थे। वे निरन्तर जन-कल्याण के कार्य में लगे रहे। देशाटन करते हुए वे अपने क्रान्तिकारी विचारों से देश की जनता को अवगत कराते रहे। अन्ततः सन् १८७५ में आर्यसमाज की स्थापना स्वामी जी ने की और **"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"** का सूत्र प्रचारित किया। उनके मन में आजादी की तड़प इतनी थी कि उनके ग्रन्थों में स्थान-स्थान में उसका उद्घाटन होता है। आज भले ही वे हमारे बीच नहीं है किन्तु उनके स्वतन्त्रता सम्बन्धी विचार उनके ग्रन्थों के माध्यम से हमें परस्पर प्रेम तथा स्वतन्त्रता की रक्षा करने के लिए प्रेरित करते रहें। कार्तिक की अमावस्या को महर्षि का महाप्रयाण हुआ और जाते जाते असंख्य वैदिक धर्मियों का दीप प्रज्वलित कर गये। आओ, ऋषि का दीप बनकर उनके ग्रन्थों का स्वाध्याय कर प्रकाश फैलाएं।

बिना विचारे स्थान न छोड़े

तिष्ठत्येकेन पादेन,
चलत्येकेन पंडितः ।
न परीक्ष्य परं स्थानं,
पूर्वमायतनं त्यजेत् ।।
(व्यास)

भावार्थ : बुद्धिमान् पुरुष को चाहिए कि - जब तक अपना अगला पैर कहीं जमा न लेवे, तब तक पिछला पैर न उठाए। मान लीजिए - आप आज जिस स्थिति में हैं, यदि उससे असन्तुष्ट होकर आगे के स्थान की बिना परीक्षा किए जा बैंठते है तो दोनों ओर से जावेंगे पहिले स्थान की अच्छी तरह परीक्षा कर लीजिए पुनः उसका त्याग कर अगले स्थान पर जमने का विचार कीजिए।

- सुभाषित सौरभ

मार्शल आर्ट कराटे

जो महिलाओं से छेड़छाड़ और युवतियों पे आंखे गड़ाते हैं।
उन बदमाशों को समझाने के लिए, मार्शल आर्ट कराटे है।
जो गरीबों पे अन्याय और अमीरों का लूटकर खाते हैं।
उन चोरों से निपटने के लिए, मार्शल आर्ट कराटे है।
जो कमजोरों का अपहरण और बेगुनाहों का खून बहाते हैं।
उन गुंडों को सबक सिखाने के लिए, मार्शल आर्ट कराटे है।
जो गांव समाज में भ्रष्टाचार और देश में हिंसा फैलाते हैं।
उन दुश्मनों को जवाब देने के लिए, मार्शल आर्ट कराटे है।
जो चोरी बदमाशी गुंडागर्दी, और हत्या भी कर जाते हैं।
उन गुनाहगारों को सजा दिलाने के लिए, मार्शल आर्ट कराटे है।

रचयिता - आर्य मैकूलाल पांडे,
ग्राम-पतेरापाली (स), जिला महासमुन्द (छ.ग.) ४९३४४९

दयानन्द तुम्हें जान न पाये

दयानन्द तुझे हम जान न पाये
जाति पे इस लिये है गम के साये

(१)

त्याग और तपस्या की तस्वीर था तू,
उजड़ते भारत की तकदीर था तू
लोहा ज्ञान का था माना सभी ने
पीर सत्य का तुझे जाना सभी ने
धरोहर तुम्हारी बचा हम न पाये
दयानन्द तुझे हम जान न पाये .... ।

(२)

कुछ अंश तेरा तो श्रद्धानन्द में था
लेखराम ने इसे खून से सींचा
गुरुदत्त ने अपनी जवानी लगाई
तो आर्यसमाज अपने रूप में आई
बिस्मिल ने शहादत के गीत थे गाये
दयानन्द तुझे हम जान न पाये .... ।

(३)

लाला लाजपतराय ने था डंका बजाया
नारायण स्वामी ने इसको सजाया
स्वतंत्रानन्द ने था, खूब संवारा
देखा हैदराबाद में इसका नजारा
उपाध्याय लेखनी के जादू जगाये
दयानन्द तुझे हम जान न पाये .... ।

(४)

जो पाला दयानन्द का हर व्रत होता
तो हिन्दुस्तान यह आर्यावर्त होता
क्या कहें आपस में हम लड़ते रहे
सत्ता मोह में ऐसे काम करते रहे
"मोहन" अपनी हालत बताई न जाये
दयानन्द तुझे हम जान न पाये .... ।

★ **मोहनलाल चड्डा** ★
१७३, एमआईजी-II, हुडको, भिलाई (छ.ग.)

"महर्षि दयानन्द तीनों ऐषणाओं से परे थे"

विचारात्मक

- खुशहालचन्द्र आर्य

ऐषणाएँ यानि इच्छायें जिनसे मनुष्य बंधा हुआ रहता है। ये तीन प्रकार की होती है (१) वित्तैषणा (२) पुत्रैषणा (३) लोकैषणा। इन तीनों ऐषणाओं ने महर्षि दयानन्द को छूआ तक नहीं था, जबकि इन तीनों ऐषणाओं से सभी मनुष्य लिप्त रहते हैं। इन्हीं की प्राप्ति में मनुष्य अपना पूरा जीवन समाप्त कर देता है, फिर भी ये ऐषणाएं पूर्ण नहीं होती। मनुष्य अपनी ऐषणाओं को प्राप्त करने के लिए जितना अधिक प्रयत्न करता है और इनको कुछ सीमा तक प्राप्त भी करता है, परन्तु इनकी प्राप्ति से मनुष्य की भूख कभी नहीं मिटती, बल्कि भूख और अधिक बढ़ती जाती है। इसलिए ऐषणाओं की प्राप्ति करना मनुष्य के लिए सुख का साधन नहीं बल्कि दुःख का कारण है। इसीलिए यजुर्वेद ने अपने चालीसवें अध्याय के प्रथम मन्त्र में कहा है -

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः मा गृधः कस्य स्विद्धनम् ।

अर्थात् इस संसार का त्याग भाव से भोग करो यानि इसमें लिप्त न रहो, लालच न करो। यह धन किसी का नहीं है यानि ईश्वर का है। महर्षि दयानन्द का जीवन इस वेद मन्त्र के अनुसार था। उनको किसी प्रकार का आकर्षण बांध नहीं सकता था। महर्षि का अपने मन के ऊपर पूरा अधिकार था। मन उनके अधीन था इसलिए स्वामी जी मन को जिधर ले जाना चाहते थे मन उसी तरफ चलता था। मन पर पूरा नियन्त्रण रखने वाला व्यक्ति ही अपने जीवन सफल हो सकता है। महर्षि के अपने जीवन में सफल होने का सबसे बड़ा कारण यही था कि उनका अपने मन के ऊपर पूरा नियन्त्रण था। इसीलिए उनका इन तीनों ऐषणाओं पर पूरा अधिकार था। वे इनमें लिप्त नहीं थे। इसका संक्षिप्त विवरण इसी भांति है।

(१) वित्तैषणा :- महर्षि जी के पिता कर्षण जी तिवारी एक अच्छे जमीदार थे, रुपयों का लेन-देन भी करते थे और मोरवी राज्य की तरफ से इनमें काफी अधकारी मिले हुए थे। वे एक अच्छे सत्ताधारी थे और प्रबन्ध को बनाए रखने के लिए कुछ सैनिकों को भी अपने पास रखते थे। इस प्रकार स्वामी जी एक अच्चे धनाढ्य परिवार में पैदा हुए थे और अपने माता-पिता जी पहली सन्तान होने से काफ लाड़-चाव में उनका जीवन बीतचा था। पैसे की इनके पास कोई-कमी नहीं थी फिर भी वे सच्चे शिव की खोज तथा मृत्यु के रहस्य को जानने के लिए नौजवानी काल में ही केवल २२ वर्ष की आर्य में ही अपने घर को छोड़ दिया और देश के अज्ञान, अन्धविश्वास व पाखण्डों से मुक्ति दिलाने के लिए अनेकों दुःखों व कष्टों को सहते हुए देश के चारों कोनों में भ्रमण किया और अपने जीवन में भी कितने ही अवसरों पर उन्हें लोभ व लालच दिया गया, पर उस लगोंटधारी सन्यासी ने अपने सिद्धान्तों पर अटल रहने के लिए उन लालच व प्रलोभनों को ठुकरा दिया और असत्य से कभी समझौता नहीं किया। वैसे तो उनके जीवन में ऐसा अनेकों घटनाएं आती है। पर यहां पर केवल घटनाओं को लिख देना पर्याप्त समझता हूँ। महर्षि जी अपने जीवन के अंतिम दिनों में यह सोचकर कि साधारण व्यक्तियों को समझाने की बजाय मुजे राजा-महाराजाओं से मिलकर उन्हें वैदिक धर्म की बातें समझानी चाहिए ताकि वेद प्रचार का कार्य तथा परोपकारी कार्य अधिक मात्रा में किये जा सके। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये स्वामी जी उदयपुर के महाराजा सज्जनसिंह के पास पहुंचे। महाराजा स्वामी जी से बहुत अधिक प्रभावित हुए और उनको अपना गुरु मान कर वेद पढ़ने लगे। एक दिन महाराजा ने कहा कि स्वामी जी आप केवल मूर्ति पूजा का विरोध न करें, बाकी सब काम अपनी इच्छा अनुसार करते रहें तो मैं आपको एक लिंग महादेव के मन्दिर का महंत बना दूंगा, जिसमें वार्षिक लाखों रुपयों की आमदनी है, आप अपनी जिन्दगी आराम से काट सकेंगे। स्वामी जी ने महन्त बनने से इन्कार कर दिया, तब महाराजा सज्जनसिंह ने कहा कि स्वामी जी आपको मालूम नहीं कि आक किससे बातें कर रहे हो, तब स्वामी जी ने कहा

कि मुझे मालूम है कि मैं किससे बातें कर रहा हूं, राजन ! आपकी आज्ञा का मैं उल्लंघन करूं तो मैं अभी दौड़ लगाकर आपके राज्य की सीमा से निकलना चाहूं तो रात भर में निकल सकता हूं, परन्तु उस परमपिता परमात्मा की आज्ञा का उल्लंघन करूं तो उसके राज्य से बाहर कभी नहीं निकल सकता, इसलिए आप ही बतावें कि मैं आपकी आज्ञा मानूं या ईश्वर की आज्ञा ? तब महाराजा ने कहा कि स्वामी आपको इतना बड़ा पद कोई नहीं दे सकता, आप विचार करें कि आपको क्या करना चाहिए, तब स्वामी जी ने कहा कि राजन् ! यह यही है कि मुझे इतना बड़ा पद देने वाला कोई नहीं मिलेगा, तो आपको इतने बड़े पद को ठुकराने वाला भी कोई नहीं मिलेगा। इन उत्तरों से महाराजा बहुत खुश हुए और स्वामी जी से क्षमा प्रार्थना करने लगे। यह था स्वामी जी का वित्तैषणा के प्रति विरोधी भाव। दूसरी घटना यह है कि स्वामी जी जब उत्तराखण्ड का भ्रमण कर रहे थे तब वे जोशी मठ पहुंचे। जो भी मठ का महन्त स्वामी जी के आकर्षक शरीर, बल, बुद्धि, विद्या से बहुत प्रभावित हुए और स्वामी जी से कहा कि आप इस मठ के महन्त बन जाओ, मैं संन्यासी बनना चाहता हूँ, तब स्वामी जी ने कहा कि महन्त जी, मैंने पिता जी की करोड़ों की सम्पत्ति को ही ठोकर मार दी, तो आपकी सम्पत्ति का महत्व ही क्या है। मैं तो किसी बड़े उद्देश्य के लिए ही घूम रहा हूं, मुझे आपके मठ का महन्त नहीं बनना, यह कह कर आगे निकल गये। यह थी स्वामी जी की वित्तैषणा के प्रति उदासीनता।

(२) **पुत्रैषणा** :-पुत्रैषणा होने का तो प्रश्न ही नहीं है। यदि पुत्रैषणा होती तो विवाह ही करवा लेते। जब स्वामी जी के माता-पिता को यह ज्ञान हो गया कि मूलशंकर (जो स्वामी जी का बचपन का नाम था) में कुछ वैराग्य के भाव आये हुए हैं, इसलिए इसका विवाह कर देना चाहिए और विवाह की तैयारी भी करने लगे। जब मूलशंकर को यह जानकारी हो गई कि तुम्हारे विवाह की तैयारी हो रही है, तब उसने माता-पिता से साफ कह दिया कि मैं विवाह नहीं करूंगा। छोटी बहन और चाचा की मृत्यु के बाद, मूलशंकर का वैराग्य और भी बढ़ गया था। बीस वर्ष की भरी जवानी में उसने गृह-त्याग कर दिया। जीवन भर पूर्ण ब्रह्मचारी रहकर अपना उद्देश्य शिव की खोज में पूरे जीवन की आहूति दे दी। इससे पाश सिद्ध होता है कि स्वामी जी की विवाह करवाने की बिल्कुल इच्छा नहीं थी। तब पुत्रैषणा होने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। स्वामी जी के जीवन में एक घटना आती है कि एक बहुत सुन्दर औरत ने स्वामी जी से कहा कि स्वामी जी मैं आप जैसा सुन्दर पुत्र चाहती है, तब स्वामी जी ने कहा कि माता जी ! मैं तो आपका ही पुत्र हूं, आप मुझे ही अपना पुत्र समझे। इससे बड़ा उदाहरण पुत्रैषणा न होने का और क्या हो सकता है ?

(३) **लोकैषणा** :- महर्षि का जीवन पढ़ने से ज्ञात होता है कि स्वामी जी ने कितने ही बहादुरी के काम किये। जैसे चार घोड़ों की बग्गी को पीछे से पकड़ कर रोक देना, लड़ते हुए दो खूंखार साण्डों के सींग पकड़कर अलग-अलग कर देना। कर्णसिंह जैसे बलशाली की तलवार पकड़कर दो टुकड़े कर देना। अपने प्राण बचाने के लिए कितनो को पछाड़ कर फिर ऊंची दीवार को फलांग कर अपने प्राणों की रक्षा करना आदि अनेक घटनाएं हैं, परन्तु स्वामी जी ने कभी भी अभिमान भरी बात नहीं कही और अपराधी को सदैव सजा न देकर क्षमा दान ही दिया। इससे उनकी निरभिमानता, विनम्रता, दयालुता आदि गुण स्पष्ट प्रकट होते हैं। जो व्यक्ति निरभिमानी विनम्र, दयालु व परोपकारी होता है, वह कभी भी यश का भूखा नहीं होता। इसलिए महर्षि दयानन्द ने लोकैषणा नाम मात्र नहीं थी। इस प्रकार हम देखते हैं कि महर्षि जी ने तीनों ऐषणाओं पर विजय प्राप्त कर रखी थी।

पता : गोविन्दराम आर्य एण्ड संस, १८०, महात्मा गांधी रोड, दो तल्ला, कोलकाता-७०००००७

भारत की युवा शक्ति किस ओर..

युवा वर्ग के मानसिक स्वास्थ्य को बिगाड़ने वाला दूरदर्शन के प्रोग्राम तथा आधुनिक इलेक्ट्रानिक मीडिया भी है। बच्चों को कच्ची उम्र में सेक्स की अच्छी शिक्षा मिल जाती है। उन कार्यक्रमों के फैशन वाले प्रोग्राम उन्हें खर्चीला बनने का प्रशिक्षण भी देते हैं। उनकी नकल मध्यमवर्गीय जीवन के लिए भारी आर्थिक बोझ तैयार करता है। आज इस नकल में माहिर और अकल में पिछड़ रहे हैं। युवा वर्ग इस रोग से ग्रस्त होता नजर आता है।

"ममता की छाँव"

प्रेरणात्मक

- देवेन्द्र कुमार मिश्रा

शादी के दस वर्ष के बाद भी जब वह माँ न बन सकी तो वह उदास रहने लगी। किसी के बच्चे को देखती तो उसके मन में कसक पैदा होती है कि काश उसकी भी कोई औलाद होती। जिसे वह डांटती, प्यार करती। पति-पत्नी दोनों ने मेडिकल टेस्ट करवाये सबकुछ नार्मल होने के बाद भी वह संतान सुख से वंचित थी। उसका पति अकेला था। माता-पिता, भाई-बहिन नहीं थे। सो आस-पास की स्त्रियां जब उसे ताना देती तो उसके लिए असहनीय हो जाता। उसकी पड़ोसन सुशीला के घर जब बेटा हुआ और वह खुशी-खुशी देखने पहुंचनी तो उसकी सास ने बच्चे का मुंह यह कहकर दिखाने से इंकार कर दिया कि बांझ स्त्री बच्चे को देखेगी तो बच्चे पर बुरा असर पड़ेगा। वह रोते-धोते वापिस आ गई। उसने अपने पिता से कहा - "क्यों न हम एक बच्चा गोद ले ले", पति ने उसे समझाया- "जब औलाद का सुख हमारी किस्मत में ही नहीं है तो किसी दूसरे के बच्चे को गोद लेकर क्या करना ?" फिर पता नहीं उस बच्चे के माता-पिता कौन है। किसका पाप है यशोदा ने कहा - "यह आप क्या कह रहे हैं। बच्चे तो भगवान का रुप होते हैं। यदि कोई पापी है तो वे स्त्री-पुरुष जो कोख में जन्में बेटे को अनाथालय में छोड़कर भाग गये।"

यशोदा की जिद के आगे पति रमेश को झुकना पड़ा। शहर के अनाथालय में वे एक बच्चा गोद ले आये। मुहल्ले में किसी ने सराहना की उनके इस कदम की तो किसी ने व्यंग्य किये। बच्चे के भविष्य की खातिर बच्चे को ये पता न लगे कि उसे गोद लिया गया है। बच्चे के बड़े होने पर उनके दिमाग पर इसका गलत असर न पड़े। ये सोचकर यशोदा ने अपने पति से कहा - "आप ट्रान्सफर ले ले। हम नये शहर में जाकर रहेंगे। बच्चे की खातिर ये जरुरी है" रमेश अपनी पत्नी से बहुत प्यार करते थे। फिर उन्हें यशोदा का कहना सही भी लगा तो उन्होने अपना तबादला भोपाल करवा लिया। हालांकि उनकी छोटी सी नौकरी में बड़े शहर में जीना महंगा था उनके लिए, लेकिन यशोदा और उनके बच्चे के लिए उन्होने महानगर में रहना ही उचित समझा।

नन्हा सा शिशु दो-चार दिन तो नये चेहरे तो देखकर खूब रोया। उसके बाद वह अपनी माँ के बिना एक पल भी नहीं रहता था। बच्चे की मालिश, दूध पिलाना, कपड़े बदलना, नहलाना, तैयार करना। चौबीसों घंटों वह बच्चे को अपने सीने से लगाकर रखती। बच्चे का नाम यशोदा ने किशन रखा। बच्चे की देखभाल में वह इतनी खो जाती कि बाकी के काम रह जाते। एक दिन रमेश ने कहा - "बच्चा क्या आया ? तुम तो मुझे भूल ही गई।"

यशोदा ने कहा - "अब पहले मैं माँ हूँ। आप अलग सोने की आदल डाल लीजिये। मैं अपने बेटे को अपने से अलग नहीं कर सकती। न ये मेरे बिना सो सकता है न मुझे इसके बिना नींद आती।" यशोदा का पूरा जीवन बच्चे के इर्द-गिर्द सिमट गया।

बच्चे का जब स्कूल में दाखिला हुआ। घर से स्कूल ५ कि.मी. दूर था। वह किशन को गोद में लेकर स्कूल जाती और स्कूल छूटने के १० मिनट पहले उसे लेने पहुंच जाती। ठंड हो या बरसात हो भीषण गर्मी हो या उसका स्वास्थ्य खराब हो। वह कंधे पर किशन का बस्ता लटकाती और उसे गोद में लेकर स्कूल लेने, छोड़ने जाती। किशन की हर इच्छा हर जिद पूरी करती। कई बार ऐसे त्योहार भी आये। जब पिता को वेतन नहीं और किशन ने नये कपड़े, खिलौने की जिद की तो यशोदा ने कभी उधार लेकर कभी घर का सामान बेचकर अपने बेटे की इच्छा पूरी की।

कई बार रमेश ने समझाया - "इतना प्रेम ठीक नहीं। ज्यादा लाड़ में बच्चा बिगड़ सकता है।" यशोदा पलटकर उत्तर देती "माँ के लाड़ से कहीं बच्चे बिगड़ते हैं। मैं अपने बेटे को लाड़ नहीं करूंगी तो कौन करेगा।"

एक बार पिता ने बच्चे को उसकी जिद पर डांट दिया। किशन को थप्पड़ रसीद कर दिया। किशन रोने लगा। उसके रोने की आवाज से यशोदा दिल की धड़कन बढ़ गई। वह दौड़कर आई। उसने किशन को सीने से लगाकर चुप कराते हुए अपने पति से गुस्चे में कहा - "खबरदार, जो मेरे बेटे को हाथ लगाया।" रमेश समझ गया कि उसकी पत्नी अब सिर्फ माँ है किशन की। उसके अलावा उसका किसी से कोई रिश्ता नहीं। सारे रिश्दे बाद में। पहले माँ-बेटे। यशोदा और किशन। दिन गुजरते रहे। रमेश रिटायर हो गये। बच्चा बड़ा हो गया। उसकी पढ़ाई पूरी हो चुकी थी। वह रोजगार की तलाश में भटक रहा था। शाम को मायूस होकर घर लौटता। माँ उसके चेहरे को देखकर उसे अपनी गोद में लिटाकर उसके बालों को सहलाकर कहती - "अभी तेरी माँ जिन्दा है और जब तक है तब तक ऐसे मुंह मत लटकाना।"

किशन कहता - "माँ वो तो ठीक है आपने अपना पूरा जीवन मेरे लिए लगा दिया। अपनी जमा पूंजी सबकुछ। अब मैं बड़ा हो गया हूं मेरा भी कुछ फर्ज बनता है।"

माँ ने उसे प्यार से झिड़कते हुए कहा - "माँ के सामने बेटा हमेशा बेटा ही रहता है। तेरी माँ तुझे और तेरी शादी के बाद अपनी बहू-बेटे सबको संभाल सकती है। बड़ी-बड़ी बातें करना लगा है। मेरे लिए अभी भी मेरा छोटा सा किशन ही है।"

और किशन अपनी माँ की गोद में ही सो जाता। सारे दुखों निराशाओं से उभरने के लिए माँ की गोद से बढ़कर स्थान उसके लिए कोई दूसरा नहीं था।

किशन अपने कालेज के मित्र के साथ बैठा था उसके मित्र की आंखों में आंसू थे। वह किशन को बता रहा था कि मेरी बेकारी पर माँ ताने देती है कि जीवन भर पाल-पोसकर बड़ा किया। पढ़ाया-लिखाया और एक नौकरी नहीं मिल रही। बेटे का फर्ज निभाने की बारी आई तो लाट साहब बेकार है। नौकरी लगेगी तभी अच्छे घर में शादी होगी। तभी तगड़ा दहेज मिलेगा। इतना बड़ा हो गया, निकम्मा घूम रहा है। तुम्हारी माँ भी यही कहती होगी।

किशन हंसा और बोला - "नहीं मेरी माँ ऐसा कुछ भी नहीं कहती। क्योंकि वह मेरी माँ है।"

उसके दोस्त ने आह भरकर कहा - "काश तेरी माँ मेरी माँ होती" किशन हंसते हुए कहता - "ऐसी माँ किस्मत वालों को मिलती है।"

एक दिन अचनाक यशोदा की सहेली सुशीला टकरा गई उसे बाजार में उसने इधर-उधर का हाल-चाल पूछकर कहा- "अरे यशोदा तेरा गोद लिया बेटा कहां है ?"

किशन माँ साथ थोड़े से पीछे खड़ा था। उसने यह बात सुन ली। उसके दिमाग में धमाके होने लगे। माँ मेरी माँ नहीं है। माँ ने मुझे जन्म नहीं दिया। मैं गोद लिया हूँ। घर आकर उसने माँ से पूछा - "आपने मुझसे क्यों छिपाया कि आप मेरी माँ नहीं है।"

"क्या मैं तुम्हारी माँ नहीं हूँ ?"

"लेकिन आप मेरी सगी माँ नहीं है।"

"बेटा, माँ सगी या सौतेली नहीं होती। माँ सिर्फ माँ होती है।"

किशन अपनी यशोदा के पैरों पर गिर पड़ा और रोते हुए बोला - "आपने मुझे पाल पोस बढ़ा किया। मुझे इतना प्यार दिया। मैं आपका ये अहसान ये कर्ज कभी नहीं चुका सकता माँ।"

यशोदा की आंखों से आंसू निकल पड़े। वह रोते हुए कहने लगी।

"मेरी ममता को अहसान और फर्ज का नाम देकर तुमने मुजे पराया कर दिया, बेटा।"

किशन उठकर चला गया। ये सोचकर कि वह कुछ बनकर अपनी पालने वाली माँ को हर सुख देगा। उसके त्याग को व्यर्थ नहीं जाने देगा। वही उसके अन्दर इस बात का दर्द भी था कि पैदा करने वालों से उसे पैदा करके अनाथाश्रम में छोड़ दिया। वह उदास रहने लगा।

यशोदा को ऐसा सदमा लगा कि उसने बिस्तर पकड़ लिया। किशन दिन-रात मेहनत करने लगा। अपने आत्मसम्मान के कारण उसने जो नौकरी नहीं की थी। उसी

नौकरी के लिए वह अपनी कालेज की दोस्त अर्चना के पास पहुंचा। अर्चना के पिता एक बहुत बड़ी कम्पनी के मालिक थे। उसे नौकरी मिल गई। अर्चना ने पूछ - "जिस नौकरी के लिए मना कर दिया था। आज ऐसा क्या मजबूरी आ पड़ी।"

किशन ने कहा - "अब मुझे अपने आतमसम्मान से ज्यादा अपनी माँ के लिए जीना है। वो माँ जिसने मुझे पाल पोसकर बड़ा किया। मेरे अपने दिन-रात एक किये। मेरा भी कर्त्तव्य बनता है कि उनके लिए कुछ कर सकूं। उन्हें सब सुख दूं। सारी खुशियाँ दूं।"

किशन रात-दिन मेहनत करने लगा। वह हर मां अपनी माँ को मनीआर्डर भेजता। मनीआर्डर पाकर यशोदा रोते हुए कहती - "मेरी ममता का अहसान चुका रहा है। जो सदमा यशोदा को लगा। वह उससे उबर न सकी। यशोदा ने बिस्तर पकड़ लिया। डॉक्टरों को दिखाया। इलाज का कोई असर नहीं हुआ। इलाज तो तन को होता हैं। मन का इलाज तो किशन था। डॉक्टरों ने कहा - यदि यही हाल रहा तो ज्यादा दिन जिन्दा नहीं रहेगी।"

रमेश सीधे अपने बेटे के पास पहुंचे और उसे डांटते हुए कहा - " जिस औरत ने तुम्हें अपनी ममता से सींचकर इतना बड़ा किया। जिस औरत के जीवन का ध्येय उसका बेटा है। तुमने उसे एक मिनट में पराया कर दिया। उसे तुम्हारे रुपये-पैसे नहीं चाहिए। उसे अपना बेटा चाहिए अपने पास। वह तुम्हारे बिना नहीं जी पायेगी। उसकी जान तुममें बसती है। अगर अपनी माँ से जरा भी प्यार है। उसे जिन्दा देखना चाहते हो तो वापिस लौट अओ।"

किशन भी सोचने लगा वे पल, वे घड़ियाँ, वे दिन, वे रात, वे महीने, सालों। जितना उसकी स्मृतिमें था। क्या मैं सिर्फ इसलिए उसका बेटा नहीं क्योंकि उसने मुझे जन्म दिया। देवकी बड़ी या यशोदा। उसने मुझे कभी पराया नहीं समझा। अपना पूरा जीवन मेरे नाम कर दिया। अपनी ममता के अमृत में दिन-रात स्नान कराती रही। अपनी आंचल की छांव में जीवन की धूप से बचाती रही। ८वीं क्लास तक तो वह माँ के साथ ही सोता रहा। उसकी एक चीख एक कराह पर मां कैसे घबरा जाती थी। उसकी इच्छा उसकी जिद के लिए माँ ने क्या कुछ नहीं किया। अपनी घड़ी अपने गहने तक बेच दिये। उसकी पढ़ाई के लिए माँ ने अपने सोने के कंगन, अंगूठी, कान की बाली तक बेच दी। माँ ने वर्षों फटी सारी को सिलकर पहना लेकिन उसे जब जो कपड़े पसन्द आते। माँ खरीदकर देती। जो मुझे पसन्द नहीं वहीं माँ ने अपनी पसन्द बना लिया। माँ की गोद जिसमें सिर रखकर वह सारी परेशानियां भूल जाता था। वो लाड़, वो दुलार, वो स्नेह, ममता का सागर सब उसके लिए ही तो था। कभी भोजन में कंकड़ निकलता तो माँ इसके सामने दोनों हथेलियाँ फैलाकर उसके मुंह से जूठा अपने हाथों में लेकर फेंकती और दिनभर अपने आपसे नाराज रहती कि कंकड़ क्यों नहीं देख सकी। बेटे को ठीक से खाना भी नहीं खिला सकती। घर में आने में थोड़ी देर हो जाये तो कितनी घबरा जाती माँ। उसे नया मोबाइल चाहिए, बाईक चाहिए। उसके मुंह से निकला और माँ उसे पूरा करने के प्रयास में लग जाती। किशन को माँ की याद सताने लगी। वह तुरन्त घर की ओर चल पड़ा।

माँ की हालत देखकर वह रोने लगा। उसने माँ के पैरों में अपना सिर टिका दिया। "माँ, मुझे माफ कर दे। यही पहला और अंतिम सत्य है कि आप मेरी माँ है और मैं आपका बेटा। मैं आपके बिना नहीं रह सकता माँ।" माँ और बेटे दोनों की आंखों से आँसुओं की धारा बहने लगी। माँ ने उसे अपने सीने से लगा लिया।

यशोदा को बिस्तर से उठते देख रमेश ने कहा - "डॉक्टर ने तुम्हें आराम करने के लिए कहा है।"

यशोदा ने कहा- "मैं आराम करूंगी तो मेरे बेटे के लिए खाना कौन बनायेगा।"

"मैं बाजार से लाता हूँ", रमेश ने कहा।

"मेरे होते हुए मेरा बेटा बाजार का खाना खायेगा। उसे सिर्फ अपनी माँ के हाथ का खाना पसन्द आता है।"

बेटे के आते ही यशोदा ठीक हो गई। पति रमेश के साथ डॉक्टर भी आश्चर्य में थे कि एकाएक मरता हुआ आदमी बिल्कुल ठीक-ठाक कैसे हो गया ? ठीक कैसे न हो उसे किशन रुपी संजीवनी बूटी जो मिल गई थी।

पता : पाटनी कालोनी, भरत नगर, चन्दनगाँव, छिन्दवाड़ा (म.प्र.) ४८०००१

गवेषणात्मक

प्रतिदिन यज्ञ करते हुए भी प्रायः लोगों को लाभ क्यों नहीं होता ?

– आचार्य आर्यनरेश,
वैदिक गवेषक

'महर्षि देव दयानन्द सरस्वती' वर्तमान युग के प्रथम ऐसे वैज्ञानिक थे, जिन्होंने आज से लगभग १२५ वर्ष पूर्व यज्ञ हवन को वेद की छाया में संसार के सभी जड़ व चेतन पदार्थों हेतु सर्वाधिक लाभकारी वैज्ञानिक सुकर्म कहा। स्व. कालजयी क्रान्तिकारी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के ३ समु. में यज्ञ पर शंकर के उत्तर में लिखते हैं कि यदि तुम **'पदार्थ विद्या'** जानते तो कभी यज्ञ का विरोध न करते। पदार्थ विद्या से अभिप्राय उन रासायनिक क्रियाओं से है जिसका अध्ययन कैमिस्ट्री इक्वेशनों के द्वारा किया जाता है। कहने का मूल अभिप्राय यह है कि **'वैदिक यज्ञ'** एक वैज्ञानिक क्रिया है। इसके द्वारा पूर्ण-लाभ अथवा शीघ्र लाभ तभी हो सकता है, जब हम इसे ठीक उसी प्रकार से करें जैसे कि देव दयानन्दादि ऋषियों ने वेद व शास्त्र के अनुसार इसका निर्देश किया है। यदि हम इसे अपनी मनचाही इच्छा से एवं मनचाहे साधनों एवं विधि से करते हैं तो इससे हानि होती है, लाभ कम होता है अथवा होता ही नहीं। इसके मुख्य कारण निम्नलिखित है (१) सबसे बड़ी त्रुटि गलत माप ऋषि आज्ञा से विरुद्ध हवनकुण्ड का चयन। देव दयानन्द सरस्वती संस्कार विधि व सत्यार्थ प्रकाश में हवन कुण्ड का परिमाण लिखते हुए संकते करते हैं कि जितना ऊपर से चौड़ा, उतना ही गहरा एवं उस चौड़ाई से चौथाई भाग पेंदे वाला। अर्थात् यदि ऊपर से १२" इंच है, तो गहरा १२" व पेंदें में ३"x ३" होना चाहिए। जबकि कुछ पौराणिक लोगों की नकल या समिधाओं को ठीक करने से बचने हेतु गलत कुण्ड का परिमाण लगभग होता है : 12x6x4 तर्क विज्ञान शील बुद्धिजीवी आर्यों को अपना कोई भी कार्य शास्त्र विरुद्ध न करना चाहिए। कुण्ड जितनी अच्छी धातु का होगा उतना अधिक लाभ होगा। पहले प्रकार के ऋषि निर्दिष्ट कुण्ड में जड़ीबूटियों को वाष्प रुप में लाने हेतु ज्वलन क्रिया में भीतर ६००° से ऊपर १३००° तक तापमान पहुंच जाता है। जिससे प्रत्येक पदार्थ कम्बश्चन क्रिया द्वारा उचित लाभ पहुंचाता है। ऐसे कुण्ड में लाभ पूर्ण लेने हेतु छिद्र करने की कभी भूल न करनी चाहिए। छिद्र करने से ताप मान कम हो सकता है तथा कुण्ड शीघ्र टूट जाता है एवं सामग्री व घृत बाहर भी गिर जाते हैं। जो लोग जलने की सुविधा हेतु छिद्र करने की बात करते हैं वह नितान्त तर्कहीन व गलत है, क्योंकि जब कुण्ड घरों व समाज भवनों की यज्ञशालाओं में धरती के भीतर बनता है तब भी तो अग्नि बहुत अच्छी प्रकार से जलती है। अपितु धरती वाला कुण्ड अधिक लाभकारी होता है, क्योंकि उसमें आहुत की गई विभिन्न रोगनाशक प्राकृतिक जड़ी-बूटियां सूक्ष्म होकर घर के नीचे वाली भूमि को भी स्वस्थ रखती है, जिससे इससे दीमक आदि का भी भय नहीं रहता। आजकल दीमक का उपचार करने वाले जहां जानलेवा रासायनिक औषधियों को खिड़की, किवाड़ों व अलमारियों में लगाते हैं वहां इसके साथ-साथ भवन के चारों ओर की धरती में भी लगाते हैं। यदि आप के पास अपना घर है अथवा बनाने जा रहे हैं तो यज्ञ कुण्ड धरती में ही तीन मेखला वाला बनायें। पक्का हवन कुण्ड आपकी पक्की ईश्वर वेद व ऋषि भक्ति का भी परिचायक है। यह आपके परिवार को आपके पश्चात् भी पक्का ईश-वेद भक्त बनने की व दैनिक यज्ञ के करने की

प्रेरणा देकर 'आर्य' बनाए रखेगा। यदि आपके पीछे पुत्र-पुत्रवधु व पौत्र आलस्यवशात् छोड़ भी देंगे तो आने वाले आर्यातिथिजन उन्हें आप द्वारा बनाए गए कुण्ड को स्मरण करवा कर पुनः परिवार सहित मिलकर संध्या हवन व वेदपाठ करने की प्रेरणा देगा। बुद्धि जीवी तर्कशील आर्यो ! जब घर-भवन में अनेक कमरे सोने-खाने एवं गप लगाने के (ड्राइंग रुम) जैसे पक्के तो फिर भगवान सर्वश्रेष्ठ यज्ञ का स्थान कच्चा क्यों ? वह घर ही नहीं जहां प्रतिदिन होम नहीं होता। मेखला का माप भी ऋषि ने दिया है। जब हमने यजुर्वेद के १८ अ. पर सर्च करवाई तो आईआईटी दिल्ली के वैज्ञानिक ने सर्वप्रथम यही पूछा कि आपका कुण्ड कैसा था, जब मैने 12x12x3 या 1x1x1/4 कहा तो वे कहने लगे बिल्कुल ठीक। इससे मिलता है पूर्ण लाभ।

पता: उद्गीथ साधना स्थली, आर्य शिखर, वेद सदन, ओमवन महर्षि दयानन्द मार्ग, हिमाचल प्रदेश-१७३१०१

कड़वा सच

- ✍ माँ-बाप के आँखों में दो बार आंसू आते हैं लड़की घर छोड़े तब... और लड़का मुंह मोड़े तब।
- ✍ जिस दिन तुम्हारे कारण माँ-बाप की आँखों में आँसू आते है, याद रखना.... उस दिन, तुम्हारा किया सारा धर्म.... आँसू में बह जाता है।
- ✍ जब छोटा था, माँ की शय्या गीली रखता था, अब बड़ा हुआ तो माँ की आंखें गीली करता है। हे पुत्र ! तुझे माँ को गीलेपन में रखने की शायद आदत हो गई है।
- ✍ बचपन में जिसने तुम्हें पाला, बुढ़ापे में उसको तुमने नहीं सम्हाला तो याद रखो ... तुम्हारे भाग्य में भड़केगी ज्वाला।
- ✍ घर में माँ को रुलाएँ और मंदिर में माँ को चुनरी ओढ़ाएँ... याद रख मंदिर की माँ तुझ पर खुश तो नहीं ... शायद खफा जरुर होगी।
- ✍ माँ-बाप को वृद्धाश्रम में रखने वाले ऐ युवक ! तनिक सोच कि उन्होने तुझे अनाथाश्रम में नहीं रखा, उस भूल की सजा तो नहीं दे रहा ?
- ✍ पेट में पाँच बेटे जिसे भारी नहीं लगे थे, वह माँ बेटों के पाँच फ्लैट्स में भी भारी लग रही है। बीते जमाने का यह श्रवण का देश..... कौन मानेगा ?
- ✍ जिस मुन्ने को माँ-बाप ने बोलना सिखाया था.... वह मुन्ना बड़ा होकर माँ-बाप को मौन रहना सिखाता है।
- ✍ बँटवारे के समय घर की हर चीज पाने के लिए झगड़ा करने वाले बेटे, दो चीजों के लिए उदार बनते हैं, जिनका नाम है, माँ-बाप।
- ✍ माँ ! कैसी हो .... इतना ही पूछने से उसे मिल गया सब कुछ।
- ✍ तुमने जब धरती पर पहला श्वांस लिया, तब तेरे माता-पिता अंतिम श्वांस लें, तब तुम उनके पास रहना...।

साभारोद्धृत - आर्य सङ्केत

पितरिप्रीतिमापन्ने प्रियन्ते सर्व देवताः ।।
पिता-माता के प्रसन्न होने से सारे देवता प्रसन्न रहते हैं।

वह माता शत्रु और पिता बैरी समान होता है जो बच्चों को अच्छी शिक्षा नहीं देता - चाणक्य

पुण्य स्मरण

कर्मयोगी : पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी

- महात्मा चैतन्यमुनि

पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी के निधन से आर्यजगत् में जो स्थान रिक्त हुआ है उसका भर पाना असंभव सा ही लगता है। स्वामी जी का जन्म ५ मई १९३७ में हुआ था तथा ५ अगस्त २०१५ को उन्होंने इस नश्वर देह का त्याग कर दिया। हमारा उनके साथ बहुत समीप का सम्बन्ध रहा है, बल्कि यदि कहें कि हमारे लिये वे किसी परिवार के सदस्य जैसे थे तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। उन्होंने हमें अपने जीवन की पूरी कहानी अनेक बार सुनाई कि किस प्रकार उनके मन में वैराग्य के भाव पैदा हुए और यह गोपाल नामक युवा कहां-कहां, कैसे-कैसे अनेक कठिनाईयों का सामना करते हुये अन्ततः दयानन्द मठ दीनानगर में पहुंचा और वहां वे क्या-क्या कार्य करते थे... आदि। सन् १९७० में अपने जीवन के ३३वें वर्ष में महर्षि दयानन्द बलिदान दिवस पर उन्होंने स्वामी सर्वानन्दजी से संन्यास लिया और उनकी इच्छा पूरी करने के लिए चम्बा के उस एकान्त तथा उबड़-खाबड़ स्थान पर पहुंचे जहां आज दयानन्द मठ चम्बा स्थित है। उन्होंने तथा आचार्य महावीर जी ने बहुत कठोर परिश्रम करके उस स्थान को समृद्धि प्रदान की है। मेरा सौभाग्य है कि मुझे आर्य प्रतिनिधि सभा में सबसे अधिक समय तक महामन्त्री के रुप में कार्य करने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। आर्य वन्दना कें सम्पादन से भी मैं लगभग २६ वर्ष तक निरन्तर जुड़ा रहा। इस दौरान अनेक प्रधानों के साथ कार्य करने का अवसर मिला तथा सभी का अपने-अपने ढंग से सभा को सहयोग रहा, मगर स्वामी जी के साथ मुझे सबसे अधिक समय कार्य करने के लिए मिला। उनमें कार्य करने की अद्भुत क्षमता ही नहीं था बल्कि संगठन को किस प्रकार से मजबूत किया जा सकता है, यह कला भी उनके पास विद्यमान थी। वे अपने अन्तिम समय तक अत्यधिक आशावादी दिखते थे, भले ही उन योजनाओं का वे किन्ही कारणों से कार्यान्वित न कर पाएं हो मगर एक मई को उनसे मिलने चम्बा पहुंचे। उस समय भी उनमें वही उत्साह और उमंग दिखाई दी थी। हम देर रात तक अपने संस्मरणों को दोहराते रहे थे... भले ही वे वर्तमान सभाओं के स्तर व संगठनादि को लेकर अन्य विशुद्ध ऋषिभक्तों की तरह बहुत चिन्तित थे मगर फिर भी बहुत आशान्वित भी थे कि कभी न कभी पुनः हमारा संगठन मजबूत होगा जब असली दयानन्दियों के हाथ में बागडोर आएगी...और भी उन्होंने उस दिन बहुत सी बातें कहीं थी ..।

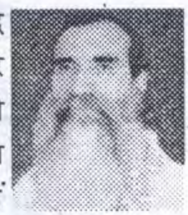

६ अगस्त को प्रातःकाल जब महावीरजी का फोन आया कि स्वामीजी गत रात लगभग पौने दस बजे चल बसे तो अपने कानों पर जैसे विश्वास नहीं हुआ मगर यह सत्य था कि स्वामी जी इस दुनियां में नहीं रहे... वे अधिकतम हमारे यहां ही ठहरते थे तथा उनके साथ इतने अधिक संस्मरण है कि यहां दे पाना असंभव सा ही है ...हाँ अपनी आत्मकथा में कुछ संस्मरणों को देने का प्रयास करूंगा। चम्बा में ८ अगस्त को आयोजित उनकी श्रद्धांजलि सभा में बोलने के लिए खड़ा हुआ तो उनके साथ बिताया समय एकदम आंखों के सामने उभर आया। स्वामी जी ने न केवल हिमाचल प्रदेश सभा के लिए बल्कि समूचे आर्यजगत् के लिए बहुत कार्य किया है, जिसके लिए उन्हें सदा ही स्मरण किया जाता रहेगा। आवश्यकता इस बात की है कि पुरानी पीढ़ी के आर्यों की तरह अपने स्वार्थों एवं एषणाओं से ऊपर उठकर, मन, वचन व कर्म से अपने मिशन के लिए कार्य करें... उनके प्रति यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी ..।

पता : वैदिक वशिष्ठ आश्रम, महादेव सुन्दरनगर, जिला मण्डी (हि.प्र.)

आत्म विश्वास से बढ़कर न कोई मित्र है न प्रगति की कोई सीढ़ी। आप इस मित्र को सदा अपने साथ रखिए, यह आपको पर्याप्त सम्बल देगा।

- रामप्रसाद बिस्मिल

पुण्य स्मरण

देवतास्वरूप भाई परमानन्द

५ नवम्बर जयन्ती

भाई परमानन्द इस युग की एक महान् विभूति थे। वे भारत माता के एक यशस्वी सपूत थे। वे मृत्युञ्जय थे। वे एक अमर बलिदानी थे। वे एक दार्शनिक और क्रांतिदर्शी थे। वे सत्यनिष्ठ थे। सत्य के लिए बड़े-से बड़ा बलिदान दिया। वे सिद्धान्ती का सौदा न कर सकते थे। वे किसी तात्कालिक लाभ के लिए सचाई को बेचना या स्वयं बिकना नहीं जानते थे। उन्होने देशहित में, परहित में कौन-सा कष्ट है जो नहीं झेला ! देश-जाति के लिए सब करणीय कार्य किए, परंतु - काम थे निष्काम क्या बदले में पाया ? वे मानवता का मान थे। एक ऊँचे समाज-सुधारक थे। लोग जातिभेद-निवारण की बातें-ही-बातें करते हैं। भाईजी ने अपने व्यवहार से जाति-पांति की बंधन-कड़ियां आज से साठ वर्ष पूर्व तोड़कर दिखाई। वे महर्षि दयानन्द की शिष्य परम्परा के आदर्श तपस्वी सन्त थे। उन्होने अपनी मान्यताओं के लिए तिरस्कार पाया। अपमान का विषपान करते रहे। देशवासियों ने उनकी हितकर सीख न सुनी परन्तु वे अपनी डगर पर चलते रहे और अपनी कहते-सुनाते रहे। देश उनकी सुन लेता तो मातृभूमि के टुकड़े न होते। ये दुर्दिन न देखने पड़ते। भाईजी की धुन को हम आचार्य चमूपति जी की पंक्तियों में ऐसे कहेंगे -

कहती है, कहे बुरा दुनिया, इस कुलटा को पतियाना क्या ?
जब प्रेम-गली में पाँव भरा, तब अपयश से घबराना क्या ?
मत चेत, हृदय हो मस्ताना- चेता तो फिर मस्ताना क्या ?
रह अपनी धुन में मस्त, न सुन है कहता तुझे जमाना क्या ?

भाई जी की कोटि का विचारक, सुधारक, तपस्वी, बलिदानी, शिक्षाशास्त्री व लेखक पश्चिम के किसी देश में जन्म लेता तो उन पर पचासों ग्रन्थ लिखे जाते। यहाँ-वहाँ उनकी प्रतिमाएँ स्थापित होतीं। उनके नाम पर कई नगर व ग्राम बसते, परन्तु इस देश ने उनको नहीं पहचाना। भाई जी का जीवन बड़ा महत्वपूर्ण है।

- राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

१५ नवम्बर जयंती

स्वामी दर्शनानन्द

- डॉ. अशोक आर्य (मण्डी डबवाली)

आर्य समाज के महान् दार्शनिक स्वामी दर्शनानन्द जी का जन्म कुलीन ब्राह्मण रामप्रताप निवासी जगराओं जिला लुधियाणा, पंजाब के यहाँ माघ कृष्ण १० सं. १९१८ वि. (इस वर्ष १५ नवम्बर जन्म दिन) को हुआ। आरंभिक नाम नेतराम को बदल कर कृपाराम रखा गया। फारसी व संस्कृत की शिक्षा प्राप्त की तथा ११ वर्ष की आयु में विवाह हो गया। वैराग्य वृत्ति वाले कृपाराम ने पिता के व्यापार को सम्भालने में कुछ भी रुचि न ली। घूमते हुए अमृतसर में महर्षि के विचार सुन नवीन वेदान्ती कृपाराम पर दयानन्द का रंग चढ़ गया। आपने महर्षि के ३७ व्याख्यान सुने तथा इतने वर्ष ही आर्य समाज की सेवा का गौरव भी पाया। काशी जाकर दर्शनों का विस्तृत अध्ययन किया तथा जो पैसा वह लेकर गए थे, उससे काशी में "तिमिर नाशक यन्त्रालय" स्थापित किया। यहां से व्याकरण व अनेक आर्ष ग्रन्थ छापकर विद्यार्थियों को सस्ते दामों में दिये। इससे छात्र मण्डली में अच्छी प्रसिद्धि मिली। १९९३-९४ में पंजाब तथा १८९९-१९०० में आगरा में प्रचार किया तथा लघु प्रचार पुस्तकें लिखना, व्याख्यान देना व शास्त्रार्थ आपके दैनिक कर्म बन गए। आगरा में ही पं. भीमसेन शर्मा से शास्त्रार्थ हुआ तथा अगले वर्ष ही गंगातट के राजघाट स्थान पर स्वामी अनुभवानन्द से संन्यास लेकर दर्शनानन्द स्वामी के नाम से प्रचार में जुए गए।

आर्य समाज के शास्त्रार्थियों में आप का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। सभी मतानुयायियों से अनेक शास्त्रार्थ किये। इस क्षेत्र में आपने अपनों को भी नहीं छोड़ा तथा वृक्षों में जीव विषय पर पं. गणपति शर्मा जी से भी उलझ पड़े, जो कि आर्यसमाज के सम्मानित प्रवक्ता थे। आपने प्रचार में पत्र व पत्रिकाओं के महत्व को खूब पहचाना। अतः आपने एक के बाद एक कुल एक दर्जन के लगभग उर्दू व हिन्दी पत्रिकाओं का सम्पादन किया। आपके प्रचार काल में आपके प्रचार क्षेत्र की भाषा उर्दू होने के कारण आपका अधिकांश लेखन व अधिकांश पत्रिकाएं उर्दू में ही रहीं। यह सब करते हुए भी आपने गुरुकुलों की वृद्धि में अपना पूरा ध्यान दिया। आप गुरुकुल शिक्षा के महत्व को अच्छी प्रकार समझते थे। आप नेतागिरी पसन्द न करते "काम करो व भूल जाओ" की भावना आपमें अति बलवती थी। इसीके मध्य दृप्टि आपकी सदा यही नीति रही कि आपने मेहनत करके गुरुकुलों की स्थापना की, अच्छी प्रकार व्यवस्थित होने के पश्चात् इन्हें सुयोग्य हाथों में सौंप दिया। आपने सिकन्दराबाद से रावलपिंडी तक अनेक गुरुकुलों की स्थापना की। वर्तमान गुरुकुल ज्वालापुर भी आपके प्रताप का ही गुणगान कर रहा है। जहां तक लेखिनी का प्रश्न है. इस क्षेत्र में भी आपकी देन अभूतपूर्व ही रही है। आपने जितनी मात्रा में तथा जितना गुणों से युक्त साहित्य विरासत में दिया, इतना बहुत कम आर्य महापुरुष ही लिख पाए हैं। आपके लेखन के विषय में यह प्रसिद्ध है कि आप प्रतिदिन किसी गहन प्रचारात्मक विषय पर एक लघु पुस्तक लिखा करते थे। इनकी निश्चित संख्या बताना अनुमान से परे हैं। दर्शनों पर आपके तार्किक भाष्य तथा छः उपनिषदों पर अत्यन्त सरल व्याख्या देकर इसे आपने सर्व सुलभ बना दिया। मनु स्मृति व गीता की टीका भी आपकी लेखनी के दर्शन कराती है। भारी संख्या में अन्य मतों की समीक्षा में भी अनेक पुस्तकें लिखीं। आप न केवल नियमित देशाटन करते रहे अपितु लेखन, प्रचार व शास्त्रार्थों में भी आपने कभी विराम न आने दिया। परिणामस्वरुप स्वास्थ्य में गिरावट आना स्वाभाविक ही था। अतः हाथरस अस्पताल में चिकित्सा के मध्य आपका देहान्त ११मई को हो गया। आपके निधन से एक महान् शास्त्रार्थ अद्वितीय प्रचारक, अभूतपूर्व वैदिक लेखक, गुरुकुलों की संख्या बढ़ाने वाला यह सितारा ऐसा विदा हुआ कि इस क्षति को पूरा कर पाना हमारे लिए असम्भव हो गया। यदि उनके जीवन से कुछ प्रेरणा लेकर हम भी स्वाध्याय व प्रचार को बढ़ा सकें तो यह उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। ●

पता : आर्य कुटीर, ११६, मित्र विहार, १२५१०४, हरियाणा

आरोग्य जगत्

होमियोपैथी चिकित्सा से अस्थमा का उपचार

- डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी
(होमियोपैथिक चिकित्सक)
मोबा. : ९८२६५११९८३, ९४२५५१५३३६

अस्थमा पूरे विश्व में एक सामान्य बीमारी है, जो कि जानलेवा भी हो सकती है। ऐसे में होमियोपैथी उपचार लाभकारी होता है। यह अस्थमा के उपचार के लिये उपयोगी सिद्ध हुआ है और यह चिकित्सा का एक सम्पूर्ण तंत्र है, जो कि शरीर की प्राकृतिक तौर पर अपने आप चंगा होने की प्रवृत्ति को बढ़ाता है। होमियोपैथी उपचार शुरु करने से पहले किसी होमियोपैथिक चिकित्सक की राय अवश्य लें।

अस्थमा के उपचार के लिए होमियोपैथिक औषधियाँ-

अस्थमा के उपचार के लिये अनेक होमियोपैथिक औषधियाँ बेहद उपयोगी है। अस्थमा के एक गम्भीर दौरे में आपको यह सलाह दी जाती है कि आप एक चिकित्सक से संपर्क करें। अस्थमा के गंभीर दौरे के खत्म होने के बाद होमियोपैथी उपचार लेने से भविष्य में होने वाले अस्थमा की बारंबारता और तीव्रता घट जाती है। अस्थमा के उपचार के लिए उपयोग में आने वाली औषधियों में से कुछ सामान्य **औषधियाँ** - अर्सेनिकम अलबम (अर्सेनिकम) : इस दवा का उपयोग सामान्य तौर पर एक एक्यूट अस्थमा के रोगी के लिए किया जाता है। इसका उपयोग आम तौरपर बैचेनी, भय, कमजोरी और आधी रात को या आधी रात के बाद इन लक्षणों का बढ़ना, जैसे लक्षणों से पीड़ित मरीजों के लिए किया जाता है।

हाऊस डस्ट माईट (हाऊस डस्ट माईट) :- इस दवा का उपयोग अक्सर ऐसे मरीजों के लिये किया जाता है, जिन्हें घर में होने वाली धूल से एलर्जी होती है। चूंकि लोगों में धूल की एलर्जी होना आम बात है, इस दवा को अस्थमा के एक गंभीर दौरे के लिए एक महत्वपूर्ण उपचार माना जाता है।

स्पोंजिआ (रोस्टेड स्पंज) :- यह उन अस्थमा से पीड़ित लोगों के लिए उपयोग में लाई जाती है, जिनको बेहद कष्टदायी खांसी होती है, और छाती में बहुत कम या बिलकुल भी कफ नहीं होता है। इस प्रकार का अस्थमा एक व्यक्ति को ठंड लगने के बाद शुरु होता है। इन मरीजों में अक्सर सूखी खांसी होती है।

लोबेलिआ (भारतीय तम्बाकू) :- इस दवा का उपयोग उन अस्थमा से पीड़ित लोगों के लिए बेहद फायदेमंद है, जिन्हें सांस की घबराहट के साथ एक लाक्षणिक (टिपिकल) अस्थमा का दौरा पड़ता है। (इसमें छाती में दबाव का एक अहसास और सूखी खांसी भी शामिल है)।

सेमबकस नाइग्रा (एल्डर) :- इस दवा का उपयोग उन अस्थमा से पीड़ित लोगों के लिए बेहद फायदेमंद है, जिन लोगों में सांस की घबराहट की आवाज के साथ दम घुटनेके लक्षण दिखाई देते हैं, खासकर यदि ये लक्षण आधी रात को या आधी रात के बाद, या लेटने के दौरान या जब मरीज ठंडी हवा के संपर्क में आते हैं, ऐसी स्थिति में अधिक बढ़ते हैं।

इपेकक्युआन्हा (इफेकाक रुट) :- इस दवा का उपयोग उन अस्थमा से पीड़ित लोगों के लिए बेहद फायदेमंद है, जिन लोगों की छाती में बहुत अधिक मात्रा में बलगम होता है।

एंटीमोनियम टेर्टारिकम (टार्टर एमेटिक) :- इस दवा का उपयोग उन अस्थमा से पीड़ित बुजुर्गों और बच्चों के लिए बेहद फायदेमंद है, जिनकी पूर्ण श्वसन-प्रश्चसन प्रक्रिया में शिथिलता या तेजी हो।

चामोमिल्ला (चामोमिल्ला) :- ब्रायोनिआ (व्हाइट ब्रायोनी), काली ब्रायक्रोमिकम (बायक्रोमेट ऑफ पोटाश), नक्स वोमिका (पोइटजन नट) जैसी दवाईयां अस्थमा के उपचार के लिए उपयोग में लाई जाती है। नैदानिक जांच से पता जलता है कि अस्थमा के उपचार के लिए होमियोपैथिक दवाईयाँ असरकारक होती है। अस्थमा एक गंभीर बीमारी है, जिसे एक प्रशिक्षित होमियोपैथिक चिकित्सक की देखरेख में ठीक किया जा सकता है। होमियोपैथिक औषधियाँ दीर्घकालिक अस्थमा में लक्षणों को नियंत्रित करने में मदद करती है। इसलिये योग्य होमियोपैथिक चिकित्सक की सलाह से अस्थमा पर नियंत्रण पाया जा सकता है। कई रोई मेरे द्वारा उपचार कराकर ठीक हो गए हैं और कई रोगियों का उपचार चल रहा है।

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
त्रैवार्षिक वृहदधिवेशन एवं निर्वाचन की कार्यवाही

सभा नियमावली धारा 25 और माननीय सभा प्रधान के निर्देशानुसार तथा अंतरंग बैठक दिनांक 27-7-2015 और नैमेत्तिक अंतरंग बैठक दिनांक 24-8-2015 में लिये गये निर्णयानुसार, छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा की त्रय वार्षिक साधारण सभा का वृहदधिवेशन एवं निर्वाचन दिनांक 11 अक्टूबर 2015 (रविवार) को पूर्वाह्न 11.00 बजे से 'रेड क्वीन' जगतपुर, हीरो होण्डा शोरुम के पास, रायगढ़ (छ.ग.) में आयोजित की गई। सभा की अध्यक्षता आचार्य अंशुदेव आर्य सभा प्रधान ने किया।

विषय क्रमांक -1. ईश प्रार्थना के साथ त्रैवार्षिक वृहद अधिवेशन की साधारण सभा प्रारम्भ की गई।

विषय क्रमांक -2. शोक प्रस्ताव -

विगत साधारण सभा के बाद दिवंगत आर्यजनों का स्मरण किया गया यथा - 1. श्री चरणसिंह साहू आर्यसमाज कांसा जांजगीर चांपा। 2. श्रीमती बेलमती (स्व. श्री बसंत आर्य की माताजी) रामनाथपुर रायगढ़। उपरोक्त लिखित दिवंगत आत्माओं के लिए दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

प्रस्ताव क्रमांक -3 - विगत साधारण सभा बैठक दिनांक 21-9-2014 के कार्यवाही की सम्पुष्टि।

सभा द्वारा वर्ष 2014-15 का छपा हुआ त्रैवार्षिक विवरण पुस्तिका सभी उपस्थित प्रतिनिधियों को वितरित की गई, तत्पश्चात् त्रैवार्षिक विवरण पुस्तिका के पृष्ठ क्र. 12 में छपी हुई कार्यवाही को सभा मंत्री जी ने प्रतिनिधियों को पढ़ने के लिये 10 मिनट का समय दिया गया, उसके बाद एक-एक बिन्दु पर समीक्षा कर संशोधन करते हुये कार्यवाहीकी सम्पुष्टि की गई।

विषय क्रमांक - 4- त्रैवार्षिक विवरण का प्रस्तुतिकरण।

सभा मंत्री श्री दीनानाथ वर्मा द्वारा त्रैवार्षिक विवरण दिनांक 23 सितंबर 2012 से दिनांक 10 अक्टूबर 2015 का सदन में प्रस्तुतिकरण किया। प्राक्कथन पढ़कर सुनाया। सभा सुसंचालन के तीन वर्ष एक सिंहावलोकन पृष्ठ 4 से 7 तक मुद्रित, छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना पृष्ठ 8 से 9, मान्य प्रतिनिधियों की सूची पृष्ठ क्र. 17 से 23 तक, सभा के अचल सम्पत्ति पृष्ठ 24 से 33 तक, सभा की गतिविधियां पृष्ठ 34 से 36 तक, गत वर्ष का वेदप्रचार, उत्सव, सम्मेलन, शिविर व विविध आयोजन पृष्ठ 38 से 52 तक, अन्तरंग बैठक दिनांक 22-9-2014 से 10-10-2015 तक अवधि में लिये गये महत्वपूर्ण निर्णय पृष्ठ 111 से 118 तक आदि का उल्लेख त्रैवार्षिक विवरण पुस्तिका में प्रकाशित किये जाने बाबत सदन में बताया गया। सदन द्वारा उपर्युक्त त्रैवार्षिक विवरण की सम्पुष्टि की गई।

विषय क्रमांक - 5- सभा का वर्ष 2013-14 एवं वर्ष 2014-15 का अंकेक्षित आय-व्यय की प्रस्तुति।

कोषाध्यक्ष श्री अवनीभूषण पुरंग द्वारा सदन में उपर्युक्त अंकेक्षित आय-व्यय जो कि पृष्ठ 53 से 108 तक मुद्रित किये जाने का उल्लेख किया, सदन द्वारा सम्पुष्टि की गई।

विषय क्रमांक -6- सभा का वर्ष 2015-16 के अनुमानित बजट की प्रस्तुति।

कोषाध्यक्ष श्री अवनीभूषण पुरंग जी द्वारा सदन में उपर्युक्त त्रैवार्षिक विवरण के पृष्ठ 109 एवं 110 में मुद्रित बजट का प्रस्तुतिकरण किया गया, जिसकी सर्वसम्मति से सम्पुष्टि की गई।

विषय क्रमांक -7- आगामी वर्ष के लिये लेखा परीक्षक की नियुक्ति।

आगामी वर्ष के लिये लेखा परीक्षक की नियुक्ति हेतु सभा प्रधान को अधिकृत किया गया।

विषय क्रमांक -8- अन्य विषय अध्यक्ष की अनुमति से।

इस मद में कोई विषय सदन में प्रस्तुत नहीं किया गया।

विषय क्रमांक -9- सभा का आगामी त्रय वार्षिक निर्वाचन।

पूर्व कार्यकारिणी स्थगित की गई। तत्पश्चात् हाऊस कम्पोंज कर माननीय श्री विनय आर्य निर्वाचन अधिकारी को सौंपी गई।

माननीय विनय आर्य महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं उपमंत्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली द्वारा निर्वाचन अधिकारी के रुप में भेजा गया था, जो कि उपस्थित रहे एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण में सभा का आगामी तीन वर्षों के लिये निर्वाचन सम्पन्न किया।

सभा का निर्वाचन गोपनीय मतपत्र पर मुहर लगाकर किया गया। पूर्ण पारदर्शिता बनाते हुये मतपत्रों की गिनती एवं चुनाव परिणाम की घोषणा सदन में श्रीमान् विनय आर्य द्वारा की गई। सभा से संबद्ध आर्यसमाजों के मान्य प्रतिनिधि, पदेन प्रतिनिधि एवं प्रतिष्ठित प्रतिनिधियों को मिलाकर कुल 102 प्रतिनिधि सुनिश्चित किये गये थे। कुल 102 प्रतिनिधियों में से 96 प्रतिनिधिगण उपस्थित रहे।

निर्वाचन अधिकारी ने सदन में प्रस्ताव रखा कि प्रधान पद का निर्वाचन करने के बाद उसे अपनी कार्यकारिणी गठन करने का अधिकार दिया जाय। प्रस्ताव को सदन द्वारा सर्वसम्मति से मंजूर किया गया।

निर्वाचन कार्यवाही प्रारम्भ की गई।

सदन में उपस्थित प्रतिनिधियों का सत्यापन किया गया।

प्रधान पद के लिये नामांकन प्रारंभ करते हुये सदन में कहा गया कि प्रधान पद के लिये नाम का प्रस्ताव एवं समर्थन का प्रस्ताव आहूत किया गया।

दो नामों का प्रस्ताव आया -

(1) नाम - आचार्य अंशुदेव आर्य

प्रस्तावक - श्री दीनानाथ वर्मा, रायपुर

समर्थक - श्री जोगीराम आर्य, श्री सोमप्रकाश गिरि एवं श्री दयाराम वर्मा

(2) नाम - श्री राजीव आर्य

प्रस्तावक - श्री अवनीभूषण पुरंग

समर्थक - श्री रामनिवास गुप्ता

नामांकन अवधि समाप्त हुई।

नाम वापसी का अवसर प्रदान किया गया परन्तु निरंक रहा।

पद एक, नाम दो होने के कारण निर्वाचन गुप्त मतदान द्वारा सम्पन्न किया गया।

96 उपस्थित प्रतिनिधियों में से दो प्रतिनिधियों ने अपना मतदान नहीं किया, परिणामस्वरुप 94 प्रतिनिधियों ने मतदान किया गया। मतपत्रों की गिनती के लिये आचार्य अंशुदेव आर्य की तरफ से श्री दीनानाथ वर्मा एवं श्री राजीव

आर्य की तरफ से श्री रामनिवास गुप्ता को अधिकृत किया गया। मतपत्रों की गिनती पश्चात यह पाया गया कि आचार्य अंशुदेव आर्य को 55 मत तथा श्री राजीव आर्य को 39 मत प्राप्त हुये, इस प्रकार 16 मतपत्रों के अन्तर से आचार्य अंशुदेव आर्य को सभा प्रधान निर्वाचित किया गया।

नई कार्यकारिणी निम्नानुसार निर्वाचित की गई :-

प्रधान	:	**आचार्य अंशुदेव आर्य**
उपप्रधान	:	श्री दयाराम वर्मा (रायपुर संभाग)
उपप्रधान	:	श्री सोमप्रकाश गिरि (बस्तर संभाग)
उपप्रधान	:	श्री गोपीराम आर्य (बिलासपुर संभाग)
उपप्रधान	:	श्री महिपतलाल आर्य (रायगढ़ संभाग)
मंत्री	:	**श्री दीनानाथ वर्मा**
उपमंत्री	:	श्री दिलीप आर्य (कार्यालय)
उपमंत्री	:	श्री चतुर्भुज आर्य (रायपुर संभाग)
उपमंत्री	:	श्री सत्यकाम आर्य (बस्तर संभाग)
उपमंत्री	:	आचार्य रणवीर आर्य (बिलासपुर संभाग)
उपमंत्री	:	श्री रविशंकर आर्य (रायगढ़ संभाग)
कोषाध्यक्ष	:	**श्री जोगीराम आर्य**
पुस्तकाध्यक्ष	:	श्री विनोद बिहारी सक्सेना
अन्तरंग सदस्य	:	श्री तापेश्वर कुमार शर्मा (रायपुर संभाग)
अन्तरंग सदस्य	:	श्री आनन्द कुमार भोई
अन्तरंग सदस्य	:	श्री राजकुमार वर्मा (बिलासपुर संभाग)
अन्तरंग सदस्य	:	श्री नरेन्द्र आर्य
अन्तरंग सदस्य	:	श्री सुन्दरलाल साहू
अन्तरंग सदस्य	:	श्री रविन्द्र कुमार स्वर्णकार
अन्तरंग सदस्य	:	श्री वृन्दासेवक (रायगढ़ संभाग)
अन्तरंग सदस्य	:	श्री लेखनकार आर्य
अन्तरंग सदस्य	:	श्री शोभाराम आर्य
अन्तरंग सदस्य	:	पं. काशीनाथ चतुर्वेदी
अन्तरंग सदस्य	:	श्री गुणनिधि आर्य
अन्तरंग सदस्य	:	श्री बीरबल आर्य
अन्तरंग सदस्य	:	श्री प्रेमानन्द आर्य

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली जिसके प्रधान आचार्य बलदेव जी महाराज है, के लिए छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से 12 प्रतिनिधि निम्नानुसार निश्चित किये गए -

1.	आचार्य अंशुदेव आर्य	प्रधान सभा	दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) 491001 मोबा. 8827750478
2.	श्री दीनानाथ वर्मा	मंत्री सभा	डी-119/1, टैगोर नगर, रायपुर (छ.ग.) 492001 मोबा. 9826363578
3.	श्री जोगीराम आर्य	कोषाध्यक्ष सभा	मु.पो.-सलखिया, व्हाया-राजपुर, जिला-रायगढ़ पिन - 496115 (छ.ग.) मोबा. 9977152119
4.	श्री दयाराम वर्मा	उपप्रधान सभा	ए-94, न्यू स्वागत विहार, डूंडा, पो.-सेजबहार, व्हाया-माना कैम्प जिला-रायपुर (छ.ग.) 492015 मोबा.: 9425503980
5.	श्री सोमप्रकाश गिरि	उपप्रधान सभा	मु.पो.-मरौद, व्हाया-कुरुद, जिला-धमतरी 493663 मोबा. 9993988466
6.	श्री महिपतलाल आर्य	उपप्रधान सभा	मु. गुड्डबहाल, पो. बहामा, व्हाया-लुड़ेग, जिला-रायगढ़ (छ.ग.) 496220, मोबा.: 8719877245
7.	श्री लेखनकार आर्य	अन्तरंग सदस्य	ग्राम-रजपुरी पो.-भूसू , व्हाया-सीतापुर, जिला-सरगुजा (छ.ग.) मोबा.: 9669499903
8.	श्री रणवीर आर्य	उपमंत्री सभा	मु. पो. कांसा, व्हाया-डभरा, जिला-जांजगीर चांपा (छ.ग.) 495688 मोबा. : 9009380550
9.	श्री दिलीप आर्य	उपमंत्री सभा	आर्यसमाज आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) 491001, मोबा.: 9630801257
10.	श्री चतुर्भुज आर्य	उपमंत्री सभा	ग्राम नानकसागर, पो. अंकोरी, व्हाया-बसना, जिला-महासमुन्द (छ.ग.) 493554 मोबा.: 8370047335
11.	पं. काशीनाथ चतुवेर्दी	अंतरंग सदस्य	ओ३म् आश्रम, अम्बिकापुर मार्ग, मनेन्द्रगढ़, जिला-कोरिया (छ.ग.) 497442 मोबा.: 09300437123
12.	श्री विभूति आर्य	प्रतिनिधि	ग्राम नागरामुड़ा, पो. आमागांव, व्हाया-तमनार, रायगढ़ (छ.ग.) 496107, मोबा. 9981558330

शांति पाठ के साथ सभा की कार्यवाही समाप्त की गई।

(दीनानाथ वर्मा)
मंत्री

(आचार्य अंशुदेव आर्य)
प्रधान

समाचार प्रवाह

भारी बहुमत से आचार्यश्री अंशुदेव आर्य पुनः प्रधान निर्वाचित

रायगढ़। दिनांक ११-१०-२०१५ को छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का रेडक्वीन जगतपुर रायगढ़ (छ.ग.) में पूर्वाह्न ११ बजे त्रैवार्षिक वार्षिक साधारण सभा का वृहदधिवेशन एवं निर्वाचन अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। तीन वर्षों का लेखा-जोखा के साथ सभा का त्रैवार्षिक विवरण प्रस्तुत किया गिया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली से चुनाव अधिकारी के रुप में श्री विनय आर्य ने सभा का आगामी तीन वर्षों के लिए निर्वाचन सम्पन्न किया, जिसमें अध्यक्ष पद पर भारी बहुमत से आचार्य अंशुदेव आर्य पुनः निर्वाचित हुए।

मंत्रिमण्डल का गठन सम्पन्न हुआ, जिसमें सभा मंत्री पद पर श्री दीनानाथ वर्मा पुनः सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए, कोषाध्यक्ष पद श्री जोगीराम आर्य के निर्वाचन के साथ तेरह पदाधिकारी एवं तेरह अंतरंग सदस्यों का निर्वाचन सम्पन्न हुआ। छत्तीसगढ़ प्रान्त के आर्य जगत् में सर्वत्र हर्षोल्लास का वातावरण देखा जा रहा है। सभी लोगों से बधाईयाँ प्राप्त हो रही है। *- निज़ संवाददाता मंत्री श्री दीनानाथ वर्मा*

नवनिर्वाचित प्रधान का आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर में भव्य स्वागत

रायपुर। दिनांक २५ अक्टूबर २०१५ रविवार को आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर के साप्ताहिक सत्संग पश्चात् नवनिर्वाचित प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य का स्वागत एवं सम्मान समारोह आयोजित किया गया। आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर के मंत्री श्री सी.एस. रघुवंशी ने कार्यक्रम का संचालन करते हुये यह कहा कि सत्यमेव जयते- की उक्ति को चरितार्थ करते हुये परमपिता परमात्मा द्वारा दिनांक ११ अक्टूबर २०१५ को सम्पन्न हुये सभा के त्रैवार्षिक वृहद अधिवेशन एवं निर्वाचन स्थान रेडक्वीन जगतपुर रायगढ़ (छ.ग.) में भारी बहुमत से आचार्य अंशुदेव जी आर्य पुनः सभा प्रधान पद पर निर्वाचित हुये। आज १५ दिन पश्चात् आचार्य श्री के रायपुर आगमन पर आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर द्वारा भव्य स्वागत एवं सम्मान किया जा रहा है। आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर के प्रधान श्री दयाराम वर्मा जी द्वारा शाल, श्रीफल एवं विजयश्री के प्रतीक दुपट्टा भेंट कर आचार्य अंशुदेव जी का सम्मान किया गया। साथ में नवनिर्वाचित कार्यकारिणी के उपप्रधान द्वय- श्री सोमप्रकाश गिरी एवं श्री दयाराम वर्मा, मंत्री- श्री दीनानाथ वर्मा, कार्यालय मंत्री- श्री दिलीप आर्य, उपमंत्री- श्री चतुर्भुज आर्य, कोषाध्यक्ष- श्री जोगीराम आर्य एवं अंतरंग सदस्य द्वय- श्री तपेश्वर कुमार शर्मा एवं श्री रविन्द्र कुमार स्वर्णकार का भी आर्यसमाज द्वारा शाल और श्रीफल से सम्मान किया गया। अपने संक्षिप्त उद्‌बोधन में आचार्य अंशुदेव आर्य जी ने कहा कि परमात्मा की असीम कृपा एवं आप सबके सौजन्य से मुझे पुनः तीन वर्ष के लिए प्रधान पद का दायित्व प्राप्त हुआ है, मैं पूर्ण कर्त्तव्यनिष्ठा एवं कर्म ही पूजा है, की भावना से सभा के कार्य को उत्तरोत्तर उन्नति की ले जाने का सत्प्रयास करूंगा। *निज संवाददाता : मंत्री दीनानाथ वर्मा रायपुर*

५१ कुण्डीय सर्वकल्याण महायज्ञ एवं त्रिदिवसीय वैदिक प्रवचन श्रृंखला

दिनांक २०, २१ एवं २२ नवम्बर २०१५

: पावन सान्निध्य :

डॉ. आचार्य वागीश जी

: सुमधुर संगीत :

कु. विदुशी सोनी (पुणे), श्री राकेश चौरसिया (जबलपुर)

स्थान : आदर्श नगर मैदान, पंचशील नगर मार्ग, जबलपुर

आयोजक : आर्य केन्द्रीय सभा, दयानन्द भवन (बराट रोड), जबलपुर (म.प्र.)

सोल्लास सम्पन्न हुआ : राष्ट्रीय डीएवी खेल महोत्सव २०१५

नन्दिनी। डी.ए.वी. इस्पात पब्लिक स्कूल नन्दिनी में दि. १५ अक्टूबर से प्रारम्भ हुआ डी.ए.वी. नन्दिनी में आयोजित क्षेत्रीय खेल महोत्सव २०१५ का समापन दिनांक १७-१००२-१५ को रंगारंग प्रस्तुति के बाद सोल्लाह सम्पन्न हो गया। समारोह में बतौर मुख्य अतिथि श्री एस.के. साहा एक्ज्यूक्टिव डायरेक्टर माइन्स ने खिलाड़ियों को सम्बोधित करते हुए कहा - खेल के मैदान में एक सुनहरे भविष्य का निर्माण होता है, ये छात्राएं खेल के मैदान में अपने हुनर से अपने अन्दर मजबूती लाकर ही दुनिया के मानचित्र में भारत को नंबर वन बनाएंगी ऐसा मुझे विश्वास है। तीन दिनों तक लगातार चलने वाले इस खेल महोत्सव में अपने प्रशिक्षकों के साथ ५०० छात्राओं ने केवल छ.ग.त के कोने कोने से प्रत्युत उ.प्र. की सीमा झांसी के पास बीना से भी पन्ना कैमोर कटनी आदि क्षेत्रों से २७ डी.ए.वी. विद्यालयों ने खेल के मौदान में जूडो, योग, बैडमिंटन, कबड्डी, खो-खो, टेबल-टेनिस, शतरंज, बालीवाल जैसे आठ खेलों के अलावा दौड़ की सारी प्रतिस्पार्धयें आयोजित की गई, जिसमें बच्चियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और जीत का हिस्सा बनी।

उपर्युक्त खेल स्पर्धाओं में डी.ए.वी. नन्दिनी ने जूडों में गोल्ड हासिल किया, शतरंज में राजहरा, दौड़ में बिलासपुर, कबड्डी में बचेली, बालीवाल में राजहरा, योग में चिरमिरी, खो-खो में विश्रामपुर, बैडमिंटन में बिलासपुर को गोल्ड मेडल से नवाजा गया। ओवरआल चैम्पियशिप का खिताब हासिल करने वाला डी.ए.वी. बिलासपुर को घोषित किया कर मुख्य अतिथि के करकमलों से पुरस्कृत किया गया। उपविजेता का पुरस्कार हासिल किया राजहरा डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल ने, तृतीय स्थान पर सर्वाधिक पदक जीतने वालों में डी.ए.वी. विश्रामपुर रहा। इस प्रकार तीन दिवसीय खेल महोत्सव का समापन विद्यालय की छात्र-छात्राओं की छत्तीसगढ़ी लोकनृत्य की मनोरम प्रस्तुति के साथ हुआ। अन्त में खेलभावना का प्रतीक झण्डा अवरोहण एवं मशाल निर्वापण तथा महोत्सव समापन की घोषणा मुख्य अतिथि ने की। कार्यक्रम को सफल बनाने में कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री टी.जी. उल्लासकुमार सर, डी.ए.वी. नन्दिनीमाइन्स का पूरा आशीर्वाद मिला।

संवाददाता : प्राचार्य, डी.ए.वी. इस्पात पब्लिक स्कूल नन्दिनी

ग्रामीण क्षेत्रों में वेदप्रचार कार्यक्रम सोल्लास सम्पन्न

दुर्ग। छत्तीसगढ़ के विभिन्न ग्रामीण क्षेत्रों में दिनांक १७ अक्टूबर १५ से २३ अक्टूबर २०१५ तक सभा प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य जी के निर्देशन में वेद प्रचार का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। जिसमें मुंगेली के अन्तर्गत हथनीकला व लोहड़िया ग्राम में, पण्डरिया, तिलईभाठ, कवर्धा एवं आंछी, बैजलपुर, कोको, दलपुरवा, बानो, मक्कड़ आदि ग्रामों सहित दुर्ग जिला के अन्तर्गत ग्राम बनई में माता शिवकुमारी वैष्णव के विशेष सहयोग से भव्य कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में भजनोपदेशक श्री टीकमसिंह आर्य मेरठ, आचार्य जगबन्धु आर्य, श्री अजय आर्य, श्री सखाराम आर्य, श्री रामअवतार, वानप्रस्थी राममुनि जी, शिवकुमार चन्द्रवंशी के विशेष सहयोग से वेदप्रचार का कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। जिसमें सभी क्षेत्रों के ग्रामीणजन भारी संख्या में उपस्थित रहे।

निज संवाददाता - आचार्य जगबन्धु शास्त्री

सभा कार्यालय दुर्ग में सभा प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य जी का भव्य सम्मान

दुर्ग। छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय दुर्ग में पुनः निर्वाचित सभा प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य जी का प्रातः ११ बजे दैनिक यज्ञ पश्चात् भव्य सम्मान किया गया। इस अवसर पर सभा मंत्री श्री दीनानाथ वर्मा, सभा कोषाध्यक्ष श्री जोगीराम आर्य, उपमंत्री रायपुर संभाग श्री चतुर्भुज आर्य, कार्यालय मंत्री श्री दिलीप आर्य, आचार्य जगबन्धु शास्त्री, वरिष्ठ प्रबंधक श्री आर.पी. यादव, श्रीनारायण कौशिक, रामाधार, श्रीमती विजयलक्ष्मी ठाकुर अनिल आर्य उपस्थित थे।

-संवाददाता : सभा कार्यालय दुर्ग

पण्डित वेदप्रकाश शास्त्री सम्मानित

नई दिल्ली । ठाकुर विक्रमसिंह ट्रस्ट लाजपतनगर नई दिल्ली द्वारा दिनांक १९ सितंबर २०१५ को पंडित वेदप्रकाश शास्त्री को उनके द्वारा समस्त जीवन भर किए गए वैदिक धर्म, सभ्यता, संस्कृति के प्रचार-प्रसार हेतु वैदिक साहित्य के लेखन, प्रकाशन तथा वैदिक शिक्षा परिषद फाजिलका के माध्यम से प्राइमरी से कालेज स्तरीय पांज ग्रुपों में प्रतिवर्ष वैदिक ज्ञान परीक्षा, नर्सरी से दूसरी कथा तक पांच ग्रुपों में रंगभरी प्रतियोगिता, महर्षि दयानन्द चित्रकला, महर्षि दयानन्द बाल कॉमिक, वेद मन्त्रोच्चारण, सुलेख, पर्यावरणीय भाषण प्रतियोगिताएं विभिन्न सामयिक विषयों पर विचार गोष्ठियों का आयोजन करके छात्र/छात्राओं में नैतिक -चारित्रिक-धार्मिक-उत्थान, राष्ट्रीय चेतना, कर्त्तव्यपारायणता, सद्भावना, शिष्टाचार, परोपकार आदि सद्गुणों के विकास एवं निखार हेतु अनवरत प्रयत्नशील रहने के कारण उन्हें ग्यार हजार रुपये का चेक, शाल, प्रशस्ति-पत्र आदि भेंट कर सम्मानित किया गया।

आर्ष गुरुकुल गौतम नगर नई दिल्ली के अधिष्ठाता माननीय स्वामी प्रणवानन्द जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुए आर्यन अभिनन्दन समारोह में उपस्थित गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के कुलाधिपति डॉ. रामप्रकाश सांसद, स्वामी सुमेधानन्द जी, श्री रामनाथ सहगल आदि महानुभावों ने शुभाशीष प्रदान करते हुये दीर्घायु एवं उत्तम स्वास्थ्य हेतु मंगलकामना प्रकट की।

श्री शास्त्री जी इससेपूर्व भी आर्य साहित्य पुरस्कार २००८, श्रेष्ठ आचार्य अवार्ड २०१२, एन.एम.एफ. अवार्ड २०१२, हिमालय और हिन्दुस्तान गौरव अवार्ड २०१२ तथा विभिन्न पुस्तकों पर भी साहित्य सम्मान एवं प्रशस्ति पत्र प्राप्त कर चुके हैं । आपकी अब तक ३३ रचनाएं प्रकाशित हो चुके हैं।

बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा का निर्वाचन सम्पन्न

पटना (बिहार) । बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री मुनीश्वरानन्द भवन नया टोला पटना का निर्वाचन दिनांक १३ सितंबर २०१५ को आर्यसमाज मंदिर झाउगंज, पटना सिटी में सार्वदेशिक सभा के कार्यकारी प्रधान श्री आनन्द कुमार आर्य (कैप्टन ग्रुप) के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ । श्री मिठाईलाल जी आर्य के तरफ से श्री हनुमत प्र. आर्य पर्यवेक्षक के रुप में उपस्थित थे । साथ ही अग्निवेश ग्रुप की ओर से रामानन्द आर्य भी इस सभा में भागीदारी निभा रहे थे । इश प्रकार सार्वदेशिक सभा के तीनों ग्रुपों द्वारा मिलकर कराये गये इस निर्वाचन में **श्री भाई वीरेन्द्र विधायक मनेर को प्रधान, श्री रमेन्द्र कुमार गुप्ता को मंत्री एवं श्री जयदेव कुमार आर्य को कोषाध्यक्ष सर्वसम्मति से चुना गया ।**

संवाददाता : श्री रमेन्द्र कुमार गुप्ता, मंत्री बि.रा.आ.प्र.सभा

गुरुकुल हरिपुर में निःशुल्क बवासीर चिकित्सा शिविर सम्पन्न

हरिपुर (उड़ीसा) । गुरुकुल हरिपुर जुनवानी विगत पांच वर्षों से शिक्षा, सेवा, संस्कार व परोपकार के कार्यों को समय-समय पर गुरुकुल के संचालक डॉ. सुदर्शन देव आचार्य के मार्गदर्शन में करते आ रहा है । बवासीर (अर्श) जैसे कष्टप्रद रोग से लोग लाभान्वित हों, इस महान उद्देश्य से गुरुकुल के तत्वावधान में द्विदिवसीय निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन २४-२५ सितम्बर २०१५ को सोनपुर जिला के जीवनदादर के जीवन कल्याण आश्रम तथा गुरुकुल हरिपुर परिसर में सम्पन्न हुआ । इस शिविर में ४२५ रोगी पंजीयन कराये जिसमें से ३२९ बवासीर रोगी (जर्मन टेक्नोलॉजी) रींग पद्धति से बिना चीर फाड़ के अपना चिकित्सा कराकर लाभान्वित हुये । यह समस्त कार्यक्रम गुरुकुल के सम्माननीय आचार्य श्री दिलीप कुमार जिज्ञासु, श्री राजेन्द्र कुमार वर्णी, श्री धर्मराज पुरुषार्थी जी के प्रबल पुरुषार्थ तथा श्री विजय कुमार लाहोटी रायपुर के सहयोग से सम्पन्न हुआ।

संवाददाता : दिलीप कुमार जिज्ञासु, आचार्य गु.हरिपुर

दीपमालिका की शुभकामना

दुखदारिद्र्यरोग प्रवृद्धं तमो,
नैव दृश्येत भूमौ कुहापि प्रभो ।
सन्तुसर्वत्र सर्वे सदानन्दिताः,
राजतां दीपमालेयमालोकिनी ॥

भावार्थ :- इस दीपोत्सव के पावन अवसर पर हे प्रभो ! ऐसी कृपा करना कि इस भूमण्डल पर दुख दरिद्रता व रोगरुप अंधकार कहीं पर भी न दिखाई दे । सर्वत्र सभी प्राणी सर्वदा आनन्दित रहें । अन्धकार को विदीर्ण कर देनेवाली यह दीपमाला जनमानस को उत्प्रेरित करती हुई देदीप्यमान रहे ।

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त पदाधिकारीगण, अंतरंग सदस्य व अग्निदूत परिवार

महात्मा चैतन्यमुनिजी को 'हिमोत्कर्षश्री' पुरस्कार

मण्डी (हि.प्र.) । मूलतः हिमाचल प्रदेश निवासी वरिष्ठ साहित्यकार एवं वैदिक प्रवक्ता व आनन्दधाम आश्रम उधमपुर, जम्मू कश्मीर के मुख्य संरक्षक व निदेशक, गुरुकुल करतारपुर के संरक्षक तथा अन्य अनेक आश्रमों, साहित्यिक संस्थाओं के संचालक एवं संरक्षक महात्मा चैतन्यमुनि जी को हिमोत्कर्ष साहित्य संस्कृति एवं जन कल्याण परिषद की ओर से उनके द्वारा साहित्य एवं समाज कल्याण के क्षेत्र में किए गए कार्य हेतु **'हिमोत्कर्ष हिमाचलश्री सम्मान'** से सम्मानित किया गया।

उल्लेखनीय है कि महात्मा जी की अब तक लगभग पचास साहित्यिक एवं आध्यात्मिक पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं तथा इन्हें अब तक साहित्य अकादमी सहित अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है । इन्होने उपन्यास, कहानी, लघुकथा, गीत, गजल, कविता, नाटक तथा निबन्ध आदि साहित्य विधा पर देश को उत्तम साहित्य प्रदान किया है । समाजसेवा के लिए भी इनका जीवन सदा ही समर्पित रहा है।

संवाददाता : प्रबंधक, वै.वशि.आ.महादेव सुन्दरनगर

अग्निदूत के ग्राहक सदस्यों की सेवा में

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मासिक मुख पत्र **'अग्निदूत'** के समस्त ग्राहक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क १००/- यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें, जिससे कि उन्हें नियमित रूप से 'अग्निदूत' भेजा जाता रहे । जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हो, उनसे निवेदन है कि वे अपना दसवर्षीय शुल्क ८००/- रु. भेजें। इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें । अन्यथा **इस मास से अग्निदूत भेजना बंद कर दिया जायेगा ।** पत्र व्यवहार में अपना सदस्य संख्या तथा पूरा पता पिन कोड सहित अवश्य लिखें । **सभा का भारतीय स्टेट बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. : 32914130515 है, जिसमें आप किसी भी भारतीय स्टेट बैंक की शाखा से आनलाईन शुल्क जमा कर सभा कार्यालय के दूरभाष नं. ०७८८-२३२२२२५ द्वारा सूचित करते हुए अलग से पत्र लिखकर अवगत कर सकते हैं ।**

अग्निदूत मासिक पत्रिका के सम्बन्ध में कोई भी शिकायत हो तो कृपया श्रीनारायण कौशिक को चलभाष नं. ९७७०३६८६१३ में सम्पर्क कर सकते हैं । **- दीनानाथ वर्मा, मंत्री** मो. ९८२६३६३५७८

कार्यालय पता : 'अग्निदूत', दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.)491001, फोन : ०७८८-२३२२२२५

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के नवनिर्वाचित अंतरंग सदस्य

रविन्द्र कुमार स्वर्णकार
अंतरंग सदस्य

राजकुमार वर्मा
अंतरंग सदस्य

नरेन्द्र आर्य
अंतरंग सदस्य

सुन्दरलाल साहू
अंतरंग सदस्य

वृन्दासेवक आर्य
अंतरंग सदस्य

लेखनकार आर्य
अंतरंग सदस्य

शोभाराम आर्य
अंतरंग सदस्य

पं. काशीनाथ चतुर्वेदी
अंतरंग सदस्य

गुणनिधि आर्य
अंतरंग सदस्य

बीरबल आर्य
अंतरंग सदस्य

प्रेमानन्द आर्य
अंतरंग सदस्य

नवम्बर 2015
डाक पंजी. छ.ग./ दुर्ग संभाग / 99 / 2015-17
CHH-HIN/2006/17407

प्रेषक :
अग्निदूत, हिन्दी मासिक पत्रिका
कार्यालय, छ.ग.प्रान्तीय आर्य
प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर,
आर्यनगर, दुर्ग -491001 (छ.ग.)

(छपी सामग्री प्रिन्टेड बुक)

सेवा में,

श्रीमान्

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक वृहदधिवेशन एवं निर्वाचन में राजस्थान से पधारे पूज्य स्वामी देवानन्द सरस्वती, निर्वाचन अधिकारी श्री विनय आर्य उपमंत्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली व सभा के नवनिर्वाचित पदाधिकारीगण

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा से छपवाकर
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग से प्रकाशित किया गया.